New
20-6-2012

।। श्री चतुर्विंशति जिनाय नमः।।

{deX
Mmbrgm g§J«h

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद चालीसा संग्रह**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम -2012 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, ब्र. सुखनन्दनजी भैया

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था दीदी
9660996425, सपना दीदी

संयोजन - किरण, आरती दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/ श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

मूल्य - 31/- रु. मात्र

_wDH$: amOy J«m{\$H$ AmQ>© (g§Xrn emh), जयपुर ● फोन: 2313339, मो: 9829050791

श्री णमोकार चालीसा

महामंत्र- **णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उव्वज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।**

दोहा- तीन लोक से पूज्य हैं अर्हतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते उनको विनत सदैव।।
णमोकार महामंत्र है काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ति जाप से, बने जीव अर्हन्त।।

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया।
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी।।
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो।
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी।
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए।।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्दरों से पूजे जाते।।
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले।
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते।
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए।।
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की प्रभु भाई।
आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।।
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए।
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते।।
पञ्चाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले।।

आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित्त दे दोष नशाते।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी।।
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
ज्ञानाभ्यास करें जो भाई, संतों को शिक्षा दें भाई।।
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो।
रत्नत्रयधारी कहलाए, मुक्ति पथ के नेता गाए।।
दर्शन-ज्ञान-चारित के धारी, साधु होते हैं अनगारी।
विषयासा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो।।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते।
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी।।
पञ्चमहाव्रत धारी जानो, पञ्चसमिति पाले मानो।
पञ्चेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले।।
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई।
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया।।
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई।
सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया।।
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी।
श्वानादि पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए।।
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए।
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए।।
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
विशद गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ।।
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप।।

जापद्वद्व ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

New
20-6-2012

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।

दोहा– वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।

छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्।।

New
20-6-2012

श्री अजितनाथ चालीसा

दोहा- नमन मेरा अरिहंत को, सिद्धों को भी साथ।
आचार्य उपाध्याय साधु को, झुका रहे हम माथ।।
जिनवाणी जिनधर्म जिन, चैत्यालय शुभकार।
अजित के पद युगल, वन्दन बारम्बार।।

(चौपाई)

जय जय अजितनाथ जिन स्वामी, हो स्वामी तुम अन्तर्यामी।
तुमने सर्व चराचर जाना, जैसा है उस रूप बखाना।।
आप हुए प्रभु केवलज्ञानी, कल्याणी प्रभु तेरी वाणी।
तुमने प्रभु शिवमार्ग दिखाया, आत्मबोध इस जग ने पाया।।
देवों के तुम देव कहाते, सारे जग में पूजे जाते।
विजय अनुत्तर है शुभकारी, चयकर आये हे त्रिपुरारी।।
जम्बूद्वीप लोक में गाया, भरत क्षेत्र उसमें बतलाया।
जिसमें कौशल देश बखाना, नगर अयोध्या अतिशय माना।।
जितशत्रु राजा कहलाए, रानी विजया देवी पाए।
ज्येष्ठ अमावस को जिन स्वामी, गर्भ में आये अन्तर्यामी।।
गर्भ नक्षत्र रोहिणी गाया, ब्रह्ममुहूर्त श्रेष्ठ बतलाया।
माघ शुक्ल दशमी शुभकारी, जन्म लिए जिनवर अविकारी।।
तभी इन्द्र का आसन डोला, लोगों ने जयकारा बोला।
आसन से तब उठकर आया, सप्त कदम चल शीश झुकाया।।
ऐरावत पर चढ़कर आया, साथ में शचि को अपने लाया।
मेरु गिरि पर लेकर जावें, पाण्डुक शिला पर न्हवन करावे।।
इन्द्र ने पद में शीश झुकाया, पग में गज लक्षण शुभ पाया।
हाथ अठारह सौ ऊँचाई, अजितनाथ के तन की गाई।।
लाख बहत्तर पूरब भाई, जिनवर ने शुभ आयु पाई।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा धारे अन्तर्यामी।।

माघ शुक्ल नौमी दिन गाया, संध्याकाल का समय बताया।
देत पालकी सुप्रभ लाए, उसमें प्रभुजी को बैठाए।।
ले उद्यान सेहुतक आए, सप्त वर्ण तरु तल पहुँचाए।
केशलुंच कर वस्त्र उतारे, सहस मुनि सह दीक्षा धारे।।
वेलोपवास किए जिन स्वामी, ध्यान किए निज अन्तर्यामी।।
ब्रह्मदत्त पड़गाहन कीन्हें, क्षीर खीर आहार जो दीन्हें।
पूर्वांग हीन लख स्वामी, तप धारे मुक्ति पथ गामी।
पौष शुक्ल एकादशी पाए, केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए।।
धनपति स्वर्ग से चलकर आया, समवशरण अनुपम बनवाया।
साढ़े ग्यारह योजन जानो, छियालिस कोष श्रेष्ठ पहिचानो।।
प्रातिहार्य से युक्त कहाए, पदमासन में शोभा पाए।
नब्बे गणधर प्रभु के गाए, प्रथम केसरी सिंह कहाए।।
एक लाख मुनि संख्या गाई, श्रेष्ठ यक्षिणी अजिता गाई।
महायक्ष शुभ यक्ष बताया, श्रोता चक्री सागर कहाया।।
तीन लाख श्रावक शुभ जानो, पाँच लाख श्राविकाएँ मानो।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सिद्धवर अतिशय पाये।।
योग निरोध प्रभु ने पाया, एक माह का समय बताया।
चैत शुक्ल पाँचे शुभ गाई, प्रातः तुमने मुक्ति पाई।।
कायोत्सर्गासन जिन पाए, सहस मुनि सह मोक्ष सिधाए।
प्रतिमाएँ कई मंगलकारी, रहीं लोक में अतिशयकारी।
जिनका आलम्बन हम पाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

सोरठा- पढ़े भाव के साथ, चालीसा चालीस दिन।
चरण झुकाए माथ, सुख-शांति सौभाग्य हो।।
पावे धन सन्तान, दीन दरिद्री होय जो।
विशद मिले सम्मान, नाम वंश यश भी बढ़े।।

New
20-6-2012

श्री सम्भवनाथ चालीसा

दोहा- पञ्च परमेष्ठी लोक में, अतिशय रहे महान।
सम्भव जिन तीर्थेश का, करते हम गुणगान।।

(चौपाई)

सम्भव जिन शुभ करने वाले, भविजन का दुःख हरने वाले।
जो अनुपम महिमा धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
गुण गाने के भाव बनाए, जिन चरणों से प्रीति लगाए।
देवों के भी देव कहाए, शत इन्द्रों से पूज्य बताए।।
श्रेष्ठ दिगम्बर मुद्रा धारे, कर्म शत्रु प्रभु सभी निवारे।
मोह विजय तुमने प्रभु कीन्हा, उत्तम संयम मन से लीन्हा।।
जम्बू द्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र पावन शुभकारी।
आर्य खण्ड जिसमें बतलाया, भारत देश श्रेष्ठ शुभ गाया।।
श्रावस्ती नगरी है प्यारी, सुखी सभी थी जनता सारी।
भूप जितारी जी कहलाए, रानी आप सुसीमा पाए।।
स्वर्गों से चयकर प्रभु आए, सारे जग के भाग्य जगाये।
फाल्गुन सुदी अष्टमी जानो, मंगलमय ये तिथि पहचानो।।
सम्भव जिनवर गर्भ में आए, रत्नदेव तब कई वर्षाये।
छह महिने पहले से भाई, हुई रत्नवृष्टि सुखदायी।।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा गाई, पावन हुई जन्म से भाई।
इन्द्र कई स्वर्गों से आए, बालक का अभिषेक कराए।।
पग में अश्व चिह्न शुभ पाया, इन्द्र ने प्रभु पद शीश झुकाया।
सम्भवनाथ नाम बतलाया, जिन गुण गाकर के हर्षाया।।
जन्म से तीन ज्ञान प्रभु पाए, अतः त्रिलोकीनाथ कहाए।
साठ लाख पूरब की भाई, आयु जिनवर की बतलाई।।
धनुष चार सौ थी ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।
अश्विन सुदी पूनम दिन आया, प्रभु ने संयम को अपनाया।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, महाव्रती बन के अविकारी।

देव कई लौकान्तिक आए, श्रेष्ठ प्रशंसा कर हर्षाए।।
देवों ने तब हर्ष मनाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पूजा करके प्रभु गुण गाए, जयकारों से गगन गुँजाए।।
स्वर्ण पेटिका दिव्य मँगाई, उसमें केश रखे शुभ भाई।
देव पेटिका हाथ सम्हाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डाले।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, निज स्वभाव में निज को पाया।
कार्तिक वदी चौथ प्रभु पाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाए, गंधकुटी अतिशय बनवाए।
प्रातिहार्य जिसमें प्रगटाए, कमलासन अतिशय बनवाए।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, गणधर आदि चरण में आए।
बारह सभा लगी मनहारी, दिव्य ध्वनि पाई शुभकारी।।
श्रावक कई चरणों में आए, भिन्न-भिन्न वह पूज रचाए।
मनवांछित फल वह सब पाए, अपने जो सौभाग्य जगाए।।
प्रभु सम्मेदशिखर पर आए, शाश्वत तीर्थराज कहलाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि कीन्हें, निज स्वभाव में दृष्टि दीन्हें।।
धवल कूट है मंगलकारी, ध्यान किए जाके त्रिपुरारी।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, एक माह निज में चित्त दीन्हें।।
चैत्र सुदी षष्टी को स्वामी, बने कर्म नश शिवपथ गामी।
एक समय में शिवपद पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।
हम यह नित्य भावना भाते, प्रभु पद अपने हृदय सजाते।
जिस पद को प्रभुजी तुम पाए, वह पद पाने पद में आए।
इच्छा पूर्ण करो हे स्वामी, तव चरणों में विशद नमामि।।
जागें अब सौभाग्य हमारे, कट जाएँ भव-बन्धन सारे।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, प्रतिदिन चालीस बार।
पढ़ने से शांति मिले, मन में अपरम्पार।।
स्वजन मित्र मिलकर सभी, करते हैं सहयोग।
इस भव में शांति 'विशद', परभव शिव का योग।।

New
20-6-2012

श्री अभिनंदननाथ चालीसा

दोहा- नव देवों के चरण में, नव कोटि के साथ।
भक्ति करते भाव से, चरण झुकाते माथ।।
अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
मुक्ति पद के भाव से, लिखते अपरम्पार।।

(चौपाई)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका कहीं न होता अंत।
बीच में तीनों लोक महान्, मध्य लोक में मध्य प्रधान।।
जिसमें जम्बूद्वीप विशेष, दक्षिण में है भारत देश।
नगर अयोध्या रहा महान्, नृपति संवर जिसका जान।।
कश्यप गोत्र रहा शुभकार, वंश इक्ष्वाकु मंगलकार।
रानी सिद्धार्था के उर आन, गर्भ में आए जिन भगवान।।
बेला प्रत्यूष रही प्रधान, पुनर्वसु नक्षत्र महान्।
वैसाख शुक्ला षष्ठी जान, पाए प्रभु गर्भ कल्याण।।
माघ शुक्ल बारस शुभकार, जन्म लिए जिन मंगलकार।
पुनर्वसु नक्षत्र प्रधान, राशि स्वामी बुध पहिचान।।
पीत वर्ण तन का शुभकार, बन्दर चिह्न रहा मनहार।
पचास लाख पूरब की जान, आयु पाये जिन भगवान।।
साढ़े तीन सौ धनुष महान्, अवगाहन प्रभु तन का जान।
प्रभु ने देखा मेघ विनाश, धारण किए आप सन्यास।।
माघ शुक्ल बारस मनहार, प्रत्यूष बेला अपरम्पार।
चित्रा हस्त पालकी जान, पुनर्वसु नक्षत्र महान्।।
नगर अयोध्या रहा महान्, दीक्षा स्थल उग्र उद्यान।
दीक्षा वृक्ष असन पहिचान, धनु बयालिस सौ उच्च महान्।।
सहस भूप सह दीक्षित जान, कर बेला उपवास महान्।
दो दिन बाद लिए आहार, क्षीर खीर का प्रभु मनहार।।

नगर अयोध्या मंगलकार, राजा इन्द्रदत्त गृहवार।
शुभ अष्टादश वर्ष विशेष, रहे आप छद्मस्थ जिनेश।।
पौष शुक्ल चौद, दिनमान, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
इन्द्र राज धनपति के साथ, आकर चरण झुकाए माथ।।
समवशरण रचना शुभकार, साढ़े दश योजन विस्तार।
पद्मासन में बैठ जिनेश, दिव्य-देशना दिए विशेष।।
गणधर एक सौ तीन महान्, वज्रनाभि थे गणी प्रधान।
तीन लाख मुनिवर अनगार, प्रभु के साथ रहे शुभकार।।
यक्षेश्वर था यक्ष प्रधान, यक्षी वज्र शृंखला जान।
छठ वैसाख शुक्ल की जान, श्री सम्मेद शिखर स्थान।।
खड्गासन से आप जिनेश, कूटानन्द स्थान विशेष।
सर्व कर्म का किए विनाश, सिद्ध शिला पर कीन्हें वास।।
पाए ज्ञान अनन्तानन्त, सुख अनन्त पाए भगवन्त।
आप हुए अभिनन्दन नाथ, चरण झुकाते तव हम माथ।।
कई जिनबिम्ब रहे शुभकार, सर्व जहाँ में मंगलकार।
अनुपम रहा दिगम्बर भेष, देते शिवपद का उपदेश।।
भक्ति करे भाव के साथ, प्रभु के चरण झुकाए माथ।
उसका होय 'विशद' कल्याण, शीघ्र प्राप्त हो केवलज्ञान।।
नश जाए क्षण में संसार, मुक्ति पद पाए शुभकार।
हम भी करते प्रभु गुणगान, प्राप्त हमें हो पद निर्वाण।।

दोहा- अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, उसका हो उद्धार।।
सुख-शांति सौभाग्य पा, जग में बने महान्।
कर्म नाश कर जीव वह, पद पावे निर्वाण।।

New
20-6-2012

श्री सुमतिनाथ चालीसा

दोहा- नव देवों को पूजते, पाने को शिव धाम।
सुमतिनाथ के पद युगल, करते विशद प्रणाम।।

चौपाई

सुमतिनाथ के पद में जावे, उसकी मति सुमति हो जावे।
प्रभु कहे त्रिभुवन के स्वामी, जन-जन के हैं अन्तर्यामी।।
अनुपम भेष दिगम्बर धारी, जिन की महिमा जग से न्यारी।
वीतराग मुद्रा है प्यारी, सारे जग की तारण हारी।।
नगर अयोध्या मंगलकारी, जन्मे सुमतिनाथ त्रिपुरारी।
पिता मेघरथजी कहलाए, मात मंगला जिनकी गाए।।
वंश रहा इक्ष्वाकु भाई, महिमा जिसकी जग में गाई।
वैजयन्त से चयकर आये, श्रावण शुक्ल दोज शुभ पाए।।
मघा नक्षत्र रहा मनहारी, ब्रह्ममुर्हूर्त पाए शुभकारी।
चैत्र शुक्ल ग्यारस दिन आया, जन्म प्रभुजी ने शुभ पाया।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाए, जा सुमेरु पर न्हवन कराए।
चकवा चिह्न पैर में पाया, सुमतिनाथ शुभ नाम बताया।।
स्वर्ण रंग तन का शुभ जानो, धनुष तीन सौ ऊँचे मानो।
जाति स्मरण देखकर स्वामी, बने आप मुक्तिपथ गामी।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी गाई, मघा नक्षत्र पाए सुखदायी।
तेला का व्रत धारण कीन्हे, सहस्र भूप संग दीक्षा लीन्हे।।
गये सहेतुक वन में स्वामी, तरुवर रहा प्रियंगु नामी।
पौष शुक्ल पूनम शुभकारी, हस्त नक्षत्र रहा मनहारी।।
नगर अयोध्या में फिर आए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।
समवशरण तव देव बनाए, दश योजन विस्तार बताए।।

गणधर एक सौ सोलह गाए, गणधर प्रथम वज्र कहलाए।
मुनिवर तीन लाख कहलाए, बीस हजार अधिक बतलाए।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, कर्म नाश कर मुक्ति पाए।
कृपा करो भक्तों पर स्वामी, बनें सभी मुक्ति पथगामी।।
इस जग के सारे दुःख पाए, अन्त में भव से मोक्ष सिधाए।
विनती चरणों विशद हमारी, बनो सभी के प्रभु हितकारी।।
चालिस लाख पूर्व की स्वामी, आयु पाए शिवपद गामी।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अन्तर्यामी।
चैत्र शुक्ल दशमी शुभ गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ति पाई।।
सहस्र मुनि सह मुक्ति पाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अविचल कूट रहा शुभकारी, तीर्थ क्षेत्र पर मंगलकारी।।
तीर्थ वन्दना करने आते, प्राणी अपने भाग्य सजाते।
सीकर जिला रहा शुभकारी, रैंवासा में अतिशयकारी।।
प्रतिमा प्रगट हुई मनहारी, सुमतिनाथ की मंगलकारी।
दर्शन प्रभु का है सुखदायी, शांतिदायक है अति भाई।।
जसों का खेड़ा ग्राम बताया, जिला भीलवाड़ा कहलाया।
मूलनायक जिन प्रतिमा सोहे, भव्यों के मन को जो मोहे।।
कई ग्रामों में प्रतिमा प्यारी, शोभित होती है मनहारी।
दर्शन पाते हैं नर-नारी, श्री जिनवर का मंगलकारी।।
जो भी प्रभु का दर्शन पाए, बार-बार दर्शन को आए।
हम भी प्रभु का ध्यान लगाएँ, निज आतम की शांति पाएँ।।

दोहा- चालीसा चालिस दिन, सद् श्रद्धा के साथ।
शांति मन में हो विशद, बने श्री का नाथ।।

* * *

New
20-6-2012

श्री पदमप्रभु चालीसा

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, करते बारम्बार।
चालीसा जिन पदम का, गाते अपरम्पार।।

चौपाई

जय-जय पद्म प्रभु जिन स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।
भेष दिगम्बर तुमने पाया, सारे जग का मोह नशाया।।
शांति छवि मुद्रा अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अस्त्र-शस्त्र त्यागे तुम सारे, रहे न कोई शत्रु तुम्हारे।।
उपरिम ग्रैवयक से चय कीन्हे, स्वर्ग संपदा छोड़ जो दीन्हे।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, चयकर आये प्रभु अवतारी।।
धरणराज के लाल कहाए, मात सुसीमा के उर आए।
वंश इक्ष्वाकु तुमने पाया, इस जग में अनुपम कहलाया।।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभकारी, चित्रा नक्षत्र रहा मनहारी।
प्रातःकाल गर्भ में आये, मात-पिता के भाग्य जगाये।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि जानो, शुभ नक्षत्र चित्रा पहचानो।
इन्द्र करें जिनकी पदसेवा, जन्मे पद्म प्रभ जिनदेवा।।
कौशाम्बी में मंगल छाया, जन्मोत्सव तव वहाँ मनाया।
इन्द्र मेरु पर न्हवन कराए, कमल चिह्न प्रभु के पद पाए।।
धनुष ढाई सौ उच्च कहाए, लाल रंग तन का प्रभु पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, प्रभु के मन वैराग्य समाया।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस तिथि जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
तृतिय भक्त प्रभु जी पाए, सहस्र भूप सह दीक्षा पाए।।
समवशरण आ देव बनाए, साढ़े नौ योजन का गाए।
बाड़ा गाँव एक बतलाया, मूला जाट वहाँ का गाया।।

उसको तुमने स्वप्न दिखाया, मन ही मन मूला हर्षाया।
उसने गृह की नींव खुदायी, उसमें मूर्ति निकली भाई।।
आस-पास के लोग बुलाए, सबको वह मूर्ति दिखलाए।
कमल चिह्न था उसमें भाई, जय बोले सब मिलके भाई।।
दर्शन करने श्रावक आए, बाधा प्रेत की दूर भगाए।
मनोकामना पूरी करते, दुःखियों के सारे दुःख हरते।।
पद्म प्रभु के गुण हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
यही भावना रही हमारी, सुखी रहे प्रभु जनता सारी।।
धर्मी हों इस जग के प्राणी, पढ़ें-सुनें हर दिन जिनवाणी।
नर जीवन को सफल बनावें, सम्यक् श्रद्धा संयम पावें।।
निज आतम का ध्यान लगावें, कर्म नाशकर शिवपुर जावें।
मुनिवर तीन सौ चौबिस भाई, साथ में प्रभु के मुक्ति पाई।।
बारह सभा जुड़ी वहाँ भाई, दिव्य देशना श्रेष्ठ सुनाई।
गणधर एक सौ ग्यारह गाए, प्रथम चमर गणधर कहलाए।।
तीस लाख पूरब की स्वामी, आयु पाये हैं प्रभु नामी।
छद्मस्थ काल छह माह का पाए, ज्ञानी बनकर शिवसुख पाए।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, योग निरोध महिने का पाए।
फाल्गुन शुक्ल चौथ शुभकारी, मुक्ति पाए प्रभु अविकारी।।
मोहन कूट से मोक्ष सिधाए, अग्निदेव भक्ति से आए।
नख केशों को तभी जलाए, प्रभु पद भक्ति कर हर्षाए।।
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुख अनन्त अविनाशी पाए।

दोहा- चालीसा प्रभु पद्म का, दिन में चालिस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, पावें शांति अपार।।

* * *

New
20-6-2012

श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, जग में अपरम्पार।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।।
चालीसा लिखते यहाँ, जिन सुपार्श्व के नाम।
तीन योग से चरण में, करके विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

जिन सुपार्श्व महिमा के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के अनुपम त्राता।।
मोह मान माया को त्यागा, केवल ज्ञान हृदय में जागा।
अतः आपके गुण सब गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जम्बू द्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
काशी देश बनारस नगरी, प्रजा सुखी जानो तुम सगरी।।
सुप्रतिष्ठ राजा शुभ गाए, पृथ्वी सेना रानी पाए।
भादव शुक्ला षष्ठी जानो, प्रत्यूष बेला शुभ पहिचानो।।
मध्यम ग्रैवेयक से चय आये, समुद्र विमान वहाँ पर पाए।
विशाख नक्षत्र रहा शुभकारी, गर्भ प्रभु पाए मनहारी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, रत्नों की वृष्टी करवाए।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाख बखानो।।
अग्निमित्र योग शुभकारी, तुला राशि जानो मनहारी।
शुक्र राशि का स्वामी गाया, जिसमें जन्म प्रभु ने पाया।।
हरित वर्ण तन का शुभ जानो, स्वस्तिक चिह्न आपका मानो।
इन्द्रराज चरणों में आया, पद में सादर शीश झुकाया।।
सहस आठ कलशा शुभ लाया, मेरू गिरि पर न्हवन कराया।
बीस लाख पूरब की भाई, आयु पाये हैं सुखदायी।।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, प्रभु के तन की मंगलदायी।
पतझड़ देख भावना भाए, मन में प्रभु वैराग्य जगाए।।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस पहिचानो, सायंकाल श्रेष्ठ शुभ मानो।
विशाख नक्षत्र श्रेष्ठ शुभ पाए, देव स्वर्ग से चलकर आए।।
पालकी श्रेष्ठ मनोगति लाए, सहस्राभ वन में पहुँचाए।
शिरीष वृक्ष रहा शुभ भाई, धनुष श्रेष्ठ दो सौ ऊँचाई।।
एक सहस्र भूपति संग आए, प्रभु के साथ में दीक्षा पाए।
सोम खेट नगरी शुभ जानो, महेन्द्रदत्त नृप के गृह मानो।।
प्रभु आहार क्षीर की कीन्हें, विषयों की आशा तज दीन्हें।
शुभ छद्मस्थ काल सुखदायी, प्रभु नौ वर्ष बताया भाई।।
फाल्गुन कृष्णा षष्ठी जानो, तिथि शुभ केवलज्ञान की मानो।
सौ-सौ इन्द्र शरण में आए, चरणों में नत शीश झुकाए।।
धनपति साथ में इन्द्र के आया, जो शुभ समवशरण बनवाया।
सौ योजन का है शुभकारी, तरुवर श्रेष्ठ अशोक मनहारी।।
गणधर पञ्चानवे शुभ गाये, बलदत्त प्रथम गणी कहलाए।
मुनिवर ढाई लाख बतलाए, जो शुभ उत्तम संयम पाए।।
काली यक्षी प्रभु की गाई, यक्ष विजय था अनुपम भाई।
गिरि सम्मेद शिखर जिन आए, कूट प्रभास प्रभुजी पाए।।
फाल्गुन वदि साते शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाखा मानो।
खड्गासन से श्री जिन स्वामी, जिन मुक्ति पाए अनुगामी।।
जिनवर श्री सुपार्श्व कहलाए, जो उपसर्ग जयी शुभ गाए।
प्रभु की प्रतिमाएँ शुभकारी, इस जग में अति मंगलकारी।।
कई इक जगह नागफण वाली, प्रतिमाएँ शुभ रही निराली।
प्राणी शुभ जिन दर्शन पाएँ, शिवपद का जो बोध कराएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
शुभ तन मन सौभाग्य पा, बने श्री के नाथ।।
सुख समृद्धि बुद्धि बल, बढ़ता अपने आप।
'विशद' ज्ञान जागे परम, कट जाते हैं पाप।।

New
20-6-2012

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हाल।
चन्द्र प्रभु के चरण में, वन्दन है नत भाल।।

(शम्भू -छन्द) तर्ज- आल्हा

भव दुःख से संतप्त मरुस्थल, में यह भटक रहा संसार।
चन्द्र प्रभु की छत्र छाँव में, आश्रय मिलता है शुभकार।।
जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्रपुरी है मंगलकार।
यहाँ सुखी थी जनता सारी, महासेन नृप का दरबार।।1।।
महिषी जिनकी वही सुलक्षणा, शुभ लक्षण से युक्त महान।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ में आये थे भगवान।।
इक्ष्वाकु वंश आपका, सारे जग में अपरम्पार।
चैत कृष्ण पाँचे को प्रभु ने, भारत भू पर ले अवतार।।2।।
शुभ नक्षत्र विशाखा पावन, अन्तिम रात्रि थी मनहार।
देव-देवियों ने हर्षित हो, आके किया मंगलाचार।।
पौष कृष्ण ग्यारस को जन्में, हर्षित हुआ राज परिवार।
इन्द्रों ने जाकर सुमेरु पर, न्हवन कराया बारम्बार।।3।।
दाँये पग में अर्द्ध चन्द्रमा, देखके इन्द्र बोला नाम।
चन्द्र प्रभु की जय बोली फिर, चरणों में कीन्हा विशद प्रणाम।।
बढ़ने लगे प्रभु नित प्रतिदिन, गुण के सागर महति महान।
आयु लाख पूर्व दश की शुभ, पाए चन्द्र प्रभु भगवान।।4।।
धनुष डेढ़ सौ थी ऊँचाई, धवल रंग स्फटिक के समान।
तड़ित चमकता देख गगन में, हुआ प्रभु को निज का भान।।
मार्ग शीर्ष शुक्ला सातें को, धारण कीन्हें प्रभु वैराग्य।
अनुराधा नक्षत्र में भाई, सहस्र भूप के जागे भाग्य।।5।।
वन सर्वार्थ नाग तरु तल में, प्रभु ने कीन्हा आतम ध्यान।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को प्रभु, पाए अनुपम केवलज्ञान।।
समवशरण की रचना आकर, देवों ने की मंगलकार।

साढ़े आठ योजन का भाई, समवशरण का था विस्तार।।6।।
गणधर रहे तिरानवे प्रभु के, उनमें रहे वैदर्भ प्रधान।
गिरि सम्मेद शिखर पर प्रभु जी, ललित कूट पर किये प्रयाण।।
योग निरोध किया था प्रभु ने, एक माह तक करके ध्यान।
भादों शुक्ल सप्तमी को शुभ प्रभु, ने पाया पद निर्वाण।।7।।
ज्येष्ठा शुभ नक्षत्र बताया, काल बताया है पौवाह्ण।
एक हजार साथ में मुनियों, ने भी पाया पद निर्वाण।।
वीतराग मुद्रा को लखकर, बने देव चरणों के भक्त।
मनोयोग से जिन चरणों की, भक्ति में रहते अनुरक्त।।8।।
समन्तभद्र मुनिवर को भाई, भस्म व्याधि जब हुई महान।
शिव को भोग खिलाऊँगा मैं, राजा से वह बोले आन।।
छुपकर उत्तम भोजन खाया, हुआ व्याधि का पूर्ण विनाश।
पता चला राजा को जब तो, राजा मन में हुआ उदास।।9।।
राजा समन्तभद्र से बोले, शिव पिण्डी को करो नमन।
पिण्डी नमन झेल न पाए, कर दो सांकल से बन्धन।।
आप स्वयंभू पाठ बनाए, शीश झुकाकर किए नमन।
पिण्डी फटी चन्द्र प्रभु स्वामी, के सबने पाए दर्शन।।10।।
प्रगट हुए देहरा में प्रभु जी, लोग किए तब जय-जयकार।
सोनागिर में आप विराजे, समवशरण ले सोलह बार।।
टोंक जिला के मैंदवास में, प्रकट हुए भूमि से नाथ।
जयपुर में बैनाड़ क्षेत्र पर, भक्त झुकाते चरणों माथ।।11।।
नगर-नगर के मंदिर में प्रभु, शोभित होते हैं अविकार।
पूजा आरति वन्दन करते, भक्त चरण में बारम्बार।।
सब जीवों में मैत्री जागे, सुख-शांतिमय हो संसार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवे भव से बेड़ा पार।।12।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, होय श्री का नाथ।।

New
20-6-2012

श्री पुष्पदन्त चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण-कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जय-जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।
पिताश्री सुग्रीव कहाए, माताश्री जयरामा पाए।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र गर्भ में आए।
प्रातःकाल का समय बताए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जन्म लिया यह मानो।
मगर चिह्न प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।।
मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।
अपराह्न काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभु ने पाया।।
दीक्षा वृक्ष पुष्प शुभ गाया, शाल वृक्ष तल ध्यान लगाया।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
कार्तिक शुक्ला तीज बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्ष तरु वन पुष्प कहाए।।

समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।
एक माह पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी पाए।
गणधर आप अठ्यासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।
आयु लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।
सर्व ऋषि दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालीस गुण के धारी मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, एक हजार मुनि संग मानो।
मूल नक्षत्र प्रभु जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।
पूजा और विधान रचाए, भावसहित चालीसा गाए।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।
जीवन में सुख-शांति पावे, भक्त भाव से जो गुण गावे।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।
मम जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।
तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष-हर्ष करके गुण गाएँ।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।
भव सिन्धु से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवीं पाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री के नाथ।।
विधि सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।

New
20-6-2012

श्री शीतलनाथ चालीसा

दोहा- नमन करें अरहंत को, करें सिद्ध का ध्यान।
आचार्योपाध्याय साधु का, करें विशद गुणगान।।
जैनागम जिनधर्म शुभ, जिन मंदिर नवदेव।
शीतलनाथ जिनेन्द्र को, वन्दूँ विनत सदैव।।

(चौपाई)

आरण स्वर्ग से चय कर आये, माहिलपुर को धन्य बनाए।
जय-जय शीतल नाथ हमारे, भव-भव के दुःख नाशन हारे।।
तुमने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।
दृढ़रथ नृप के पुत्र कहाए, मात सुनन्दा प्रभु की गाए।।
गर्भोत्सव तव इन्द्र मनाए, रत्न वृष्टि करके हर्षाए।।
क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, जन्मोत्सव पर न्हवन कराए।।
आयु लाख पूर्व की जानो, कल्प वृक्ष लक्षण पहिचानो।
नब्बे धनुष रही ऊँचाई, महिमा जिनकी कही न जाई।।
पद युवराज आपने पाया, कई वर्षों तक राज्य चलाया।
हिम का नाश देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।।
केशलोंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर प्रभु अविकारी।
पंच महाव्रत प्रभु ने पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
संयम तप धारण कर लीन्हें, संवर और निर्जरा कीन्हें।
कर्म घातिया प्रभु जी नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।।
इन्द्र अनेकों चरणों आये, भक्ति भाव से शीश झुकाए।
पूजा कीन्हीं मंगलकारी, अतिशय हुए वहाँ पर भारी।।
समवशरण तव देव बनाए, प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए।

गणधर रहे सतासी भाई, जिनकी महिमा है अधिकाई।।
कुन्थु गणधर प्रथम कहाए, चार ज्ञान के धारी गाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्य जीव सुनने को आए।।
गणधर झेले जिसको भाई, सब भाषा मय सरल बनाई।
सम्यक् दर्शन पाए प्राणी, सुनकर श्री जिनवर की वाणी।।
कुछ लोगों ने संयम पाया, मोक्ष मार्ग उनने अपनाया।
गगन गमन करते थे स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।।
स्वर्ण कमल पग तल में जानो, देव श्रेष्ठ रचते थे मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आये, योग रोधकर ध्यान लगाए।।
विद्युतवर शुभ कूट कहाए, जिसकी महिमा कही न जाए।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र पिछानो।।
इक साधु के संग में भाई, शीतल जिन ने मुक्ति पाई।
विशद भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जिस पथ को तुमने अपनाया, मेरे मन में पथ वह भाया।
इसी राह पर हम बढ़ जाएँ, उसमें कोई विघ्न न आएँ।।
साहस बढ़े हमारा स्वामी, बने मोक्ष के हम अनुगामी।
शिव पदवी को हम भी पाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, होवे भव से पार।।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, होवे बहु गुणवान।
कर्म नाशकर शीघ्र ही, उसका हो निर्वाण।।

* * *

श्री श्रेयांसनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, झुका भाव से शीश।
भक्ति करे जो भी विशद, पा जाए आशीष।।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।
श्रेयांशनाथ भगवान को, वन्दन बारम्बार।।

(चौपाई)

जय जय श्रेयांशनाथ गुणधारी, स्वामी तुम हो जग हितकारी।
तुमने भेष दिगम्बर धारा, लगे हृदय को प्यारा-प्यारा।।
स्वामी तुम सर्वज्ञ कहाए, तीर्थंकर ग्यारहवें गाए।
शांत छवि है श्रेष्ठ निराली, जन-जन का मन हरने वाली।।
नाम तुम्हारा प्यारा-प्यारा, जग को तुमने दिया सहारा।
सिंहपुरी नगरी है प्यारी, श्रेष्ठ भक्त रहते नर-नारी।।
राजा विष्णुराज कहाए, रानी वेणु देवी पाए।
स्वर्ग लोक से चय कर आए, सिंहपुरी में मंगल छाए।।
हुई रत्न वृष्टि शुभकारी, नगरी पावन हो गई सारी।
श्रेष्ठ कृष्ण दशमी शुभ जानो, गर्भकल्याणक प्रभु का मानो।।
जन्म प्रभु ने जिस दिन पाया, इन्द्रराज ऐरावत लाया।
नाम श्रेयांस कुमार बताया, अनुपम जयकारा लगवाया।।
चन्द्र कलाओं जैसे स्वामी, वृद्धि पाए थे शिवगामी।
मेरु गिरि पर न्हवन कराया, इन्द्र ने अपना धर्म निभाया।।
फाल्गुन कृष्णा ग्यारस भाई, जन्म तिथि जिनवर की गाई।
प्रभु के चरणों शीश झुकाया, गेण्डा चिह्न देख हर्षाया।।
अस्सी धनुष रही ऊँचाई, श्री श्रेयांश के तन की भाई।
लाख चौरासी वर्ष की स्वामी, आयु पाए अन्तर्यामी।।
देख बसन्त लक्ष्मी विनशाई, जिनवर ने शुभ दीक्षा पाई।
फाल्गुन कृष्णा चौदस जानो, प्रभु का तप कल्याणक मानो।।

देव पालकी लेकर आए, प्रभुजी को उसमें बैठाए।
तभी पालकी देव उठाए, मानव उसमें रोक लगाए।।
प्रभु को लेकर हम जाएँगे, साथ में हम संयम पाएँगे।
देव तभी सुनकर घबराए, नहीं पालकी देव उठाए।।
लिए पालकी मानव जाते, गगन में प्रभु को ले उड़ जाते।
वन में प्रभुजी को पहुँचाए, वस्त्र उतारे दीक्षा पाए।।
केशलुंच निज हाथों कीन्हें, देवों ने भक्ति से लीन्हें।
दिव्य पेटिका में ले चाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डालें।।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभकारी, हुई लोक में मंगलकारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाते, जिनप्रभु की शुभ महिमा गाते।
सप्त योजन विस्तार बताया, महिमाशाली अनुपम गाया।।
गणधर श्रेष्ठ बहत्तर गाए, कुन्थु जिनमें प्रथम कहाए।
दिव्य ध्वनि प्रभु की शुभकारी, चउ संध्या में खिरती न्यारी।।
सुर नर पशु सभी मिल आते, कोई सम्यक् दर्शन पाते।
कोई देश व्रतों को पावें, कोई संयम को उपजावें।।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा प्यारी, तिथि हो गई मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, हुए पथ के अनुगामी।।
अपने सारे कर्म नशाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
विशद भावना हम यह भाए, तव गुण पाने को हम आए।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ।।
श्री श्रेयांस के नाम का, करे भाव से जाप।
विशद ज्ञान को पाएगा, कट जाएँगे पाप।।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।

New
20-6-2012

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

(चौपाई)

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।।
आषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातःकाल का समय बिताए।।
फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।
शुभ नक्षत्र विशाका गया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिह्न पैर में पाया।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।
माघ शुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।
अपराह्न काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।।
प्रभु मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।
आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढ़ोक लगाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।।

गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।
एक माह पूर्व से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।
दश हजार विक्रियाधारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।।
चौवन सौ अवधिज्ञानी पाए, सहस्र बहत्तर सब ऋषि गाए।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्र बताईं।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख बहत्तर पाई।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ति पाए।।
पाँचो कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर में प्रभु के मानो।
ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी।।
मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।।
सुख-शांति वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।
रत्नत्रय पा कर्म नशाए, शीघ्र विभव से मुक्ति पाए।।
यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ति दो हमको त्रिपुरारी।
भव सागर में नहीं भ्रमाएँ, शिवपद पाके शिवसुख पाएँ।।

दोहा- चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांति विशद, बनते शिवपति ईश।।

New
20-6-2012

श्री विमलनाथ चालीसा

दोहा- पञ्च परम परमेष्ठि को, वन्दन बारम्बार।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद अनगार।।
पूज्य हुए हैं लोक में, विमलनाथ भगवान।
भक्ति भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र जिसमें शुभकारी।
अंगदेश जिसमें शुभ गाया, नगर कम्पिला श्रेष्ठ बताया।।
राजा कृतवर्मा शुभ गाये, जैनधर्म धारी कहलाए।
जयश्यामा जिनकी महारानी, जिनकी नहीं है कोई शानी।।
वंश इक्ष्वाकु जिनका गाया, जो इस जग में श्रेष्ठ बताया।
ज्येष्ठ वदी दशमी शुभकारी, प्रातःकाल की बेला प्यारी।।
शुभ नक्षत्र आपने पाया, उत्तरा भाद्रपद नाम बताया।
सहस्रार से चयकर आये, माँ के गर्भ को धन्य बनाए।।
माघ कृष्ण की चौथ बताई, मीन राशि अतिशय शुभ गाई।
बृहस्पति राशि का स्वामी, पाये हैं जिन अन्तर्यामी।।
तप्त स्वर्ण सम तन शुभ पाए, उससे भी न नेह लगाए।
साठ धनुष तन की ऊँचाई, सूकर लक्षण जानो भाई।।
वर्ष साठ लख आयु पाए, जग के भोग तुम्हें न भाए।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुए आप मुक्ती पथगामी।।
शुक्ला माघ चतुर्थी जानो, सन्ध्याकाल श्रेष्ठ पहिचानो।
चलकर देव स्वर्ग से आए, साथ पालकी अपने लाए।।
उसमें प्रभु जी को बैठाए, सहस्राभ वन चलकर आये।
जम्बू वृक्ष रहा शुभकारी, जिसके नीचे दीक्षा धारी।।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
दो उपवास आपने कीन्हे, शुभ क्षीरान्न आहार में लीन्हे।।
नृपति कनक प्रभ अनुपम गाया, आहारदाता जो कहलाया।
चन्दनपुर नगरी शुभकारी, रही पारणा नगरी प्यारी।।

उत्तम संयम प्रभु जी पाए, तप से अपने कर्म नशाए।
माघ शुक्ल षष्ठी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।।
इन्द्र वहाँ चलकर के आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
चरणों आकर ढोक लगाए, समवशरण रचना करवाए।।
छह योजन विस्तार बताया, जिसमें प्रभुजी को बैठाया।
पद्मासन से बैठे स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।।
केवलज्ञानी अनुपम गाए, साढ़े पाँच सहस्र बतलाए।
ग्यारह सौ थे पूरब धारी, समवशरण में मुनि अविकारी।।
साढ़े अड़तिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी, रहे पाँच सौ ज्ञानी ध्यानी।।
मुनि बानवे सौ अविकारी, रहे विक्रिया ऋद्धीधारी।
अड़तालिस सौ अवधिज्ञानी, आगम वर्णित संख्या मानी।।
वादी छत्तिस सौ बतलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए।
पचपन गणधर श्रेष्ठ बताए, गणधर प्रथम मंदरजी गाये।।
अड़सठ सहस मुनि अविकारी, साथ में प्रभु के थे शुभकारी।
एक लाख आर्यिकाएँ जानो, गणिनी प्रमुख पद्मश्री मानो।।
श्रावक शुभ दो लाख बताए, श्रोता प्रमुख स्वयंभू गाए।
यक्ष चतुर्मुख जानो भाई, यक्षी वैरोटी बतलाई।।
अनुबद्ध केवली चालिस गाए, पन्द्रह लाख वर्ष तप पाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहिले शिवगामी।।
अषाढ़ कृष्ण आठें शुभ जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो।
गिरि सम्मेद शिखर से भाई, कूट सुवीर से मुक्ती पाई।।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, वीतराग दर्शाने वाले।
उनके शुभ दर्शन हम पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।

दोहा- चालीसा पढ़ते शुभम्, दिन में चालिस बार।
सुख शांति सौभाग्य पा, पाते भव से पार।।
विमलनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।
यही भावना है 'विशद', होय शीघ्र निर्वाण।।

New
20-6-2012

श्री अनन्तनाथ चालीसा

दोहा- नव देवों के चरण में, वंदन बारम्बार।
अनन्तनाथ जिनराज का, चालीसा शुभकार।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
जिसमें कौशल देश बताया, नगर अयोध्या पावन गाया।।
राजा सिंहसेन कहलाए, इक्ष्वाकु वंशी शुभ गाए।
सर्वयशा रानी कहलाई, शुभ लक्षण से युक्त बताई।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर आये, पुष्पोत्तर विमान शुभ पाए।
चयकर माँ के गर्भ में आए, माता के सौभाग्य जगाए।।
ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, जन्म प्रभु पाये मनहारी।
राशि श्रेष्ठ मीन शुभ जानो, बृहस्पति स्वामी पहिचानो।।
तन का वर्ण स्वर्ण शुभ गाया, पग में सेही चिह्न बताया।
तीस लाख वर्षों की भाई, अनन्तनाथ ने आयु पाई।।
धनुष पचास रही ऊँचाई, श्री जिनेन्द्र के तन की भाई।
पन्द्रह लाख वर्ष का स्वामी, राजभोग पाए शिवगामी।।
उल्का पतन देखकर भाई, हो विरक्त शुभ दीक्षा पाई।
शुभ नक्षत्र रेवती गाया, सायंकाल का समय बताया।।
नगर अयोध्या अनुपम जानो, सागरदत्त पालकी मानो।
आप सहेतुक वन में आए, पीपल वृक्ष श्रेष्ठ शुभ पाए।।
दीक्षा वृक्ष की शुभ ऊँचाई, छह सौ धनुष शास्त्र में गाई।
एक हजार नृपति शुभ आए, दीक्षा प्रभु के साथ में पाए।।
केशलुंच कर दीक्षा धारे, अपने सारे वस्त्र उतारे।
दो उपवास आपने कीन्हे, फिर क्षीरान्न आप शुभ लीन्हे।।
नगर अयोध्या में शुभ जानो, नृपति विशाखराज पहिचानो।

आहारदाता जो कहलाया, उसने अनुपम पुण्य कमाया।।
वन उपवन में ध्यान लगाए, दो वर्षों का समय बिताए।
कृष्णा चैत अमावस जानो, केवलज्ञान तिथि पहचानो।।
इन्द्र कुबेर आदि शुभकारी, देव चरण में आये भारी।
समवशरण रचना करवाई, खुश हो जय-जयकार लगाई।।
साढ़े पाँच योजन का भाई, मणि रत्नों का है सुखदायी।
पाँच हजार केवली गाए, पूरबधारी सहस बताए।।
साढ़े पैंतिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, पाँच सहस्र कही जिनवाणी।।
तैंतालिस सौ अवधिज्ञानी, बत्तिस सौ वादी विज्ञानी।
आठ सहस ऋद्धि के धारी, छयासठ सहस मुनि अविकारी।।
गणधर श्रेष्ठ पचास बताए, गणधर श्री जय प्रथम कहाए।
किन्नर यक्ष रहा शुभकारी, यक्षी वैरोटी मनहारी।।
एक माह पहले जिन स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
गिरि सम्मेद शिखर शुभकारी, कूट स्वयंप्रभ है मनहारी।।
कृष्णा चैत अमावस जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
रेवती शुभ नक्षत्र बताया, आसन कायोत्सर्ग कहाया।।
एक हजार शिष्य शुभ गाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
शुभ अनुबद्ध केवली गाये, छत्तिस आगम में बतलाये।।
वीतराग जिनकी प्रतिमाएँ, भव्यों को शिवमार्ग दिखाएँ।
जिनबिम्बों के हम गुण गाते, नत हो सादर शीश झुकाते।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े सुने जो कोय।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य श्री, सुख समृद्धि होय।।
गुण अनन्त के कोष हैं, अनन्त नाथ भगवान।
उनकी अर्चा से मिले, 'विशद' शीघ्र निर्वाण।।

New
20-6-2012

श्री धर्मनाथ चालीसा

दोहा- रहे पूज्य नव देवता, तीनों लोक महान्।
धर्मनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।।
चालीसा गाते यहाँ, भाव सहित शुभकार।
वन्दन करते पद युगल, जिन पद बारम्बार।।

(चौपाई)

लोकालोक रहा शुभकारी, मध्य लोक जिसमें मनहारी।
मध्य में जम्बूद्वीप बताया, भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया।।
जिसमें अंग देश है भाई, रत्नपुरी नगरी सुखदायी।
भानुराय जिसमें कहलाए, कुरू वंश के स्वामी गाए।।
कश्यप गोत्री जो कहलाए, महारानी सुव्रता जो पाए।
वैसाख शुक्ल त्रयोदशि जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो।।
शुभ नक्षत्र रेवती पाए, चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाए, प्रभु जी माँ के गर्भ में आए।।
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
अतिशय जन्म प्रभुजी पाए, जन्म कल्याणक जो कहलाए।।
कर्क राशि का योग बताया, राशि स्वामी चन्द्र कहाया।
स्वर्ण वर्ण तन का है भाई, धनुष पैंतालिस है ऊँचाई।।
वर्ष लाख दश आयु पाए, वज्रदण्ड पहिचान कराए।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा पाए अन्तर्यामी।।
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
दीक्षा नगर रत्नपुर गाया, सायंकाल का समय बताया।।
देव पालकी लेकर आये, नागदत्ता शुभ नाम बताए।
शालिवन उद्यान बताया, दीर्घपर्ण तरुवर कहलाया।।
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।
दो उपवास आपने कीन्हें, शुभ क्षीरान्न बाद में लीन्हे।

धर्म मित्र दाता कहलाया, पाटलिपुत्र नगर शुभ गाया।।
एक वर्ष तप काल बताया, बाद में केवलज्ञान जगाया।
पौष शुक्ल पूनम शुभ जानो, संध्याकाल समय शुभ मानो।।
इन्द्र राज-चरणों में आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
साथ में देव अन्य कई आए, समवशरण रचना बनवाए।।
पाँच योजन विस्तार बताया, पद्मासन प्रभु ने शुभ पाया।
साथ में केवलज्ञान जगाए, साढ़े चार सहस बतलाए।।
सात हजार विक्रियाधारी, नौ सौ पूरब धर अविकारी।
चालिस सहस सात सौ भाई, शिक्षक की संख्या बतलाई।।
चार हजार पाँच सौ जानो, मनःपर्यय ज्ञानी पहिचानो।
अवधि ज्ञानधारी मुनि आए, तीन सहस छह सौ बतलाए।।
दो हजार आठ सौ भाई, वादी मुनि संख्या बतलाई।
प्रभु के साथ मुनीश्वर आए, चौंसठ सहस पूर्ण कहलाए।।
गणधर तैंतालिस कहलाए, अरिष्ठसेन प्रथम गणि कहाए।
यक्ष किंपुरुष जानो भाई, अनन्तमति यक्षी कहलाई।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सुदत्तवर अनुपम गाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहले शिवगामी।।
कायोत्सर्गासन प्रभु पाए, स्वामी प्रातः मोक्ष सिधाए।
चौथ ज्येष्ठ शुक्ला की जानो, मोक्ष कल्याणक की तिथि मानो।।
पन्द्रहवें तीर्थंकर गाए, जग को मुक्ति मार्ग दिखाए।
जिन प्रतिमाएँ हैं शुभकारी, वीतराग मुद्रा अविकारी।।
दर्शन कर सद्दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।
प्रभु की महिमा है शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुने जो लोग।
सुख शांति सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग।।
धर्मनाथ के चरण को, ध्याये जो गुणवान।
अल्प समय में ही, 'विशद' पावें वह निर्वाण।।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा- अरहन्तों को नमन कर, सिद्धों को उर धार।
आचार्योपाध्याय साधु को, वन्दन बारम्बार।।
चैत्य-चैत्यालय धर्म जिन, आगम यह नवदेव।
शांतिनाथ के चरण में, वन्दन करूँ सदैव।।

(तर्ज - नित देव मेरी...)

शांति जिन की वन्दना जो, जीव करते हैं सभी।
सुख-शांति में रहते मगन, वह खेद न पाते कभी।।
प्रभु हैं दिगम्बर वीतरागी, शुद्ध हैं निर्दोष हैं।
प्रभु ज्ञान दर्शन वीर्य सुखमय, सद्गुणों के कोष हैं।।1।।
चयकर प्रभु सर्वार्थ सिद्धि, से यहाँ पर आए हैं।
विश्वसेन नृप के पुत्र माता, ऐरादेवी पाए हैं।।
जन्में हस्तिनागपुर में, वंश इक्ष्वाकु कहा।
भरणी शुभ नक्षत्र पाए, काल प्रातः का रहा।।2।।
माह भादों कृष्ण सातें, गर्भ में आए प्रभो।
स्वप्न सोलह मात देखे, नृत्य सुर कीन्हें विभो।।
ज्येष्ठ वदि चौदस प्रभु का, जन्म कल्याणक कहा।
इन्द्र ने लक्षण चरण में, हिरण शुभ देखा अहा।।3।।
चक्रवर्ती रहे पञ्चम, मदन बारहवें कहे।
प्रभु सोलहवे कहे जिन, स्वर्ण रंग के जो रहे।।
वर्ष इक लख श्रेष्ठ आयु, प्रभु की उत्तम कही।
धनुष चालिस श्रेष्ठ प्रभु के, तन की ऊँचाई रही।।4।।
जाति स्मरण से प्रभु, वैराग्य धारण कर लिए।
वैशाख शुक्ला तिथि एकम्, भक्त तृतिय जो किए।।
आम्रवन में नन्द तरु तल, में प्रभु दीक्षा धरे।
दीक्षा धरके सहस्र राजा, केश लुन्चन खुद करे।।5।।

गरुड प्रभु का यक्ष मानो, मानसी यक्षी कही।
शुभ हरिषेणा मुख्य प्रभु की, आर्यिका अनुपम रही।।
पौष शुक्ला तिथि दशमी, ज्ञानकेवल पाए हैं।
समवशरण तब देव आके, श्रेष्ठ शुभ बनवाए हैं।।6।।
व्यास साढ़े चार योजन, सभा का शुभ जानिए।
नगर हस्तिनागपुर में, ज्ञान पाए मानिए।।
एक महिने पूर्व से जो, योग का शुभ रोधकर।
ध्यान चेतन का लगाए, आत्मा का बोधकर।।7।।
गिरि सम्मेदाचल से मुक्ति, शांति जिनवर पाए हैं।
ज्येष्ठ कृष्णा तिथि चौदश, शिव गमन बतलाए हैं।।
भूप नौ सौ साथ में, मुक्तिश्री को पाए हैं।
काल प्रातः मोक्ष प्रभु श्री, शांति जिन का गाए हैं।।8।।
गणी छत्तिस शांति जिन के, वीतरागी जानिए।
प्रथम चक्रायुध गणी अति, श्रेष्ठतम शुभ मानिए।।
शांति जिन की अर्चना कर, शांति पाते हैं सभी।
ध्यान जो करते प्रभु का, वे दुःखी न हों कभी।।9।।
शांति जिन के बिम्ब जग में, कष्ट इस जग के हरें।
भक्त के गृह शांति जिनवर, शांति की वर्षा करें।।
शांति जिन के तीर्थ जग में, कई जगह पर छाए हैं।
शांति दाता शांति जिनवर, लोक में कहलाए हैं।।10।।
बानपुर आहार थूवौन, वीना खजुराहो कहा।
हस्तिनागपुर देवगढ़ अरु, रामटेक अतिशय रहा।।
भाव से जिन अर्चना कर, पुण्य का अर्जन करें।
शांति जिन का ध्यान करके, भव जलधि से हम तरें।।11।।

दोहा- चालीसा चालिस दिन, पढ़े जो चालीस बार।
'विशद' शांति सौभाग्य पा, पावे भव से पार।।

New
20-6-2012

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार।।
शांतिनाथ भगवान के, करते चरण प्रणाम।
चालीसा गाते यहाँ, पाने निज का धाम।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।
रानी ऐरादेवी पाए, जानो सुत शांतिजिन गाए ।।
माँ के गर्भ में प्रभु जब आये, रत्नवृष्टि तब देव कराए।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।
जन्म प्रभुजी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया।।
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्र नेत्र से दर्शन पाया।।
पग में हिरण चिह्न शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।
पञ्चम चक्रवर्ति कहलाए, कामदेव बारहवें गाए।।
तीर्थंकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।
सहस्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।

एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, तप कल्याणक प्रभु का मानो।।
आत्म ध्यान कीन्हें तव स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।
योग निरोध किए जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।
नो सौ मुनि श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले।।
अहार क्षेत्र वानपुर जानो, बीना बारहा भी पहिचानो।
रामटेक सीरोन कहाया, खजुराहो पचराई गाया।।
गाँव-गाँव में बिम्ब बताए, गिनती कहो कौन कर पाए।
जो भी अर्चा करते भाई, अर्चा होती है फलदायी।
कई लोगों ने शुभ फल पाए, रोग-शोक दारिद्र नशाए।।
शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता।
भाव सहित प्रभु को जो ध्याये, इच्छित फल वह मानव पाए।
पूजा अर्चा कर जो ध्यावे, सुख-शांति सौभाग्य जगावे।
निज आतम का वैभव पावे, अनुक्रम से फिर शिवपुर जावे।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण।।

New
20-6-2012

श्री कुन्थुनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चालीसा जिन कुन्थु का, गाते हम शुभकार।।

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी पर गाया, जिसमें जम्बूद्वीप बताया।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, आर्य खण्ड की महिमा न्यारी।।
कुरुजांगल शुभ देश कहाया, नगर हस्तिनापुर शुभ गाया।
सूरसेन राजा कहलाए, कुरूवंश के स्वामी गाए।।
रानी श्रीमती शुभ गाई, धर्म परायण जानो भाई।
श्रावण कृष्णा दशमी जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, गर्भ प्रभु ने जिसमें पाया।
चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आये, आप वहाँ अहमिन्द्र कहाए।।
सुदि एकम वैशाख कहाए, जन्म प्रभु कुन्थु जिन पाए।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, आग्नेय शुभ योग कहाया।।
वृषभ राशि पाए शुभकारी, स्वामी शुक्र रहा मनहारी।
इन्द्रराज तब स्वर्ग से आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
ऐरावत स्वर्गों से लाए, प्रभु जी को उस पर बैठाए।
पाण्डुक शिला पे लेकर आए, क्षीर नीर से न्हवन कराए।।
बकरा चिह्न पैर में पाया, स्वर्ण रंग तन का शुभ गाया।
सहस पञ्चानवे आयु पाई, पैंतिस धनुष रही ऊँचाई।।
जाति स्मरण करके स्वामी, बने मुक्ति पथ के अनुगामी।
सुदि एकम वैसाख बताई, संध्याकाल में दीक्षा पाई।।
विजया देव पालकी लाए, उस पर प्रभुजी को बैठाए।
आप सहेतुक वन में आए, तिलक वृक्ष तल दीक्षा पाए।।
चार सौ बीस धनुष ऊँचाई, दीक्षा तरू की जानो भाई।
प्रभु ने तेला के व्रत कीन्हे, सहस भूप सह दीक्षा लीन्हे।।

नगर हस्तिनापुर के स्वामी, अपराजित राजा थे नामी।
पड़गाहन प्रभु का शुभ कीन्हे, क्षीरान्न शुभ आहार में दीन्हे।।
तप में सोलह वर्ष बिताए, फिर प्रभु केवलज्ञान जगाए।
चैत्र शुक्ल तृतिया शुभ जानो, अपराह्न काल समय शुभ मानो।।
इन्द्र राज स्वर्गों से आए, धनपति इन्द्र साथ में लाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, चार योजन विस्तार कहाए।।
समवशरण में आसन भाई, पद्मासन प्रभु की बतलाई।
बत्तिस सहस केवली गाए, सात सौ पूरवधारी आए।।
पैंतिस सौ मनःपर्यय ज्ञानी, ढाई सहस थे अवधि ज्ञानी।
इक्यावन सौ विक्रिया धारी, दो हजार वादी अविकारी।।
साठ सहस कुल साधु जानो, समवशरण की संख्या मानो।
प्रभु के पैंतिस गणधर गाए, प्रथम स्वयंभू जी कहलाए।।
यक्ष श्रेष्ठ गन्धर्व था भाई, यक्षी जयादेवी बतलाई।
श्री सम्मेद शिखर पर आए, कूट ज्ञानधर प्रभु जी पाए।।
एक माह पहले से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
सुदि एकम वैशाख बताई, सायंकाल में मुक्ति पाई।।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, कायोत्सर्गासन शुभ गाया।
सहस मुनि सह मुक्ति पाए, चौबिस अनुबद्ध केवली गाए।।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर पदवी शुभ पाए।
आप हुए त्रयपद के धारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी।।
सत्तरहवें तीर्थंकर गाये, जग को मुक्ति मार्ग दिखाए।
महिमा 'विशद' आपकी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

दोहा- कुन्थुनाथ भगवान का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, पावे भवदधि पार।।
चालीसा चालिस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ।।

New
20-6-2012

श्री अरहनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद नमन, करते योग सम्हार।
अरहनाथ के चरण में, वन्दन बारम्बार।।

चौपाई

अरहनाथ भगवान हमारे, भवि जीवों के तारण हारे।
तीन लोक में मंगलकारी, जो हैं जन-जन के उपकारी।।
उनकी महिमा हम भी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
स्वर्ग लोक से चयकर आये, नगर हस्तिनापुर शुभ गाए।।
पिता सुदर्शन जी कहलाए, मातश्री मित्रावति पाए।
फाल्गुन सुदी तीज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, गर्भ कल्याणक श्रेष्ठ मनाए।
रत्नवृष्टि कीन्हें शुभकारी, नगर सजाए अतिशयकारी।।
अष्टकुमारिकाएँ भी आई, गर्भ का शोधन श्रेष्ठ कराईं।
मंगसिर सुदी चौदस को स्वामी, जन्म लिए मुक्तिपथ गामी।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, मेरु गिरि पर न्हवन कराया।
मछली चिह्न प्रभु पद पाया, अरहनाथ तब नाम सुनाया।।
तीन धनुष तन की ऊँचाई, प्रभु ने अपनी देह की पाई।
अस्सी सहस वर्ष की स्वामी, आयु पाए अन्तर्यामी।।
बयालिस सहस वर्ष तक भाई, राज्य किए प्रभुजी सुखदायी।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुई विरक्ति जग से नामी।।
रेवती नक्षत्र श्रेष्ठ सुखदायी, गये सहेतुक वन में भाई।
कुरुवंश के लाल कहाए, स्वर्ण वर्ण प्रभु तन का पाए।।
मंगसिर शुक्ल दशें शुभ जानो, शुभ नक्षत्र में प्रभुजी मानो।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, हुए जहाँ से मुनि अविकारी।।
तृतिय भक्त प्रभु जी कीन्हें, आत्म ध्यान में चित्त जो दीन्हें।

अपराह्नकाल का समय बताया, प्रभु ने संयम को जब पाया।।
एक हजार मुनि शुभकारी, सह दीक्षित थे मंगलकारी।
सोलह दिन का समय बिताया, प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया।।
कार्तिक शुक्ला बारस जानो, अपराह्नकाल समय पहिचानो।
श्रेष्ठ सहेतुक वन शुभ गाया, रेवती नक्षत्र परम पद पाया।।
साढ़े तीन योजन का भाई, समवशरण था मंगलदायी।
आम्र वृक्ष सुरतरु शुभ गाया, कुबेर यक्ष प्रभु का बतलाया।।
यक्षी जया श्रेष्ठ शुभ गाई, गणधर तीस बताए भाई।
कुंभ प्रथम गणधर शुभ जानो, पचास हजार ऋषि पहिचानो।।
छह सो दश थे पूरबधारी, सोलह सो वादी शुभकारी।
अट्ठाइस सौ अवधिज्ञानी, अट्ठाइस सौ केवल ज्ञानी।।
पैंतिस सहस आठ सौ भाई, पैंतिस संख्या शिक्षक गाई।
तैंतालिस सौ विक्रियाधारी, छह हजार आर्यिका शुभकारी।।
साढ़े सत्रह सौ शुभ गाए, विपुल मति ज्ञानी कहलाए।
तीन लाख श्राविकाएँ जानो, एक लाख श्रावक पहिचानो।।
प्रभु सम्मेद शिखर जी आए, एक माह का ध्यान लगाए।
कृष्णा चैत अमावश भाई, रोहिणी नक्षत्र में मुक्ति पाई।।
आप हुए त्रय पद के धारी, कामदेव जिन चक्र के धारी।
जिला ललितपुर में शुभकारी, क्षेत्र नवागढ़ मंगलकारी।।
भू से प्रगट हुए जिन स्वामी, मंगलकारी शिवपद गामी।
उनके दर्शन जो भी पाए, 'विशद' स्वयं सौभाग्य जगाए।।

दोहा- 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
पावे सुख सौभाग्य वह, बने श्री का ईश।।

जाप-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः।

New
20-6-2012

श्री मल्लिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, चौबिस जिन के साथ।
मल्लिनाथ जिनराज पद, विनत झुकाते माथ ।।

चौपाई

मल्लिनाथ जिनराज कहाए, संयम पाके शिवसुख पाए।
प्रभु है वीतरागता धारी, सारे जग में मंगलकारी ।।
अपराजित से चय कर आये, चैत्र शुक्ल एकम तिथि गाए।
मिथला के नृप कुम्भ कहाए, प्रजावति के गर्भ में आए ।।
इक्ष्वाकु नन्दन कहलाए, कलश चिह्न पहिचान बताए।
अश्विनी नक्षत्र श्रेष्ठ बतलाए, प्रातःकाल का समय कहाए ।।
मगसिर शुक्ला ग्यारस गाए, जन्म प्रभु मल्लि जिन पाए।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का है भाई ।।
तड़ित देख वैराग्य समाया, प्रभु ने सद् संयम को पाया।
इन्द्र पालकी लेकर आए, उसमें प्रभु जी को बैठाए ।।
इन्द्र पालकी जहाँ उठाते, नरपति तव आगे आ जाते।
मानव लेकर आगे बढ़ते, देव गगन में लेकर उड़ते ।।
मगशिर शुक्ला ग्यारस पाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।
श्रेष्ठ मनोहर वन शुभ पाया, तरु अशोक वन अनुपम गाया ।।
समवशरण शुभ देव रचाए, त्रय योजन विस्तार कहाए।
वैशाख कृष्ण दशमी को भाई, प्रभु ने जिनवर दीक्षा पाई ।।
पौर्वाह्न का समय बताया, षष्ठम भक्त प्रभु ने पाया।
शालि वन में पहुँचे स्वामी, तरु अशोक तल में शिवगामी ।।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।
वरुण यक्ष प्रभु का शुभ गाया, यक्षी पद विजया ने पाया ।।
पचपन सहस्र वर्ष की भाई, प्रभु की शुभ आयु बतलाई।

गणधर शुभ अट्ठाइस बताए, गणी विशाख पहले गाए ।।
साढ़े पाँच सौ पूरब धारी, उन्तिस सहस्र शिक्षक अविकारी।
बाईस सौ अवधिज्ञानी गाए, चौदह सौ वादी बतलाए ।।
उन्तिस सौ विक्रिया के धारी, बाईस सौ केवली मनहारी।
सत्रह सौ पचास मुनि गाए, मनःपर्ययज्ञानी बतलाए ।।
पचपन सहस्र आर्यिका भाई, मधुसेना गणिनी बतलाई।
एक लाख श्रावक कहलाए, चालिस सहस्र मुनि सब गाए ।।
योग रोधकर ध्यान लगाए, एक माह का समय बिताए।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी जानो, गिरि सम्मेद शिखर पर मानो ।।
भरणी शुभ नक्षत्र बताया, प्रभु ने मुक्ति पद शुभ पाया।
सायंकाल रहा शुभकारी, गौधूलि बेला मनहारी ।।
तीर्थंकर पद पाके स्वामी, बने मोक्षपद के अनुगामी।
महा मनोहर मुद्राधारी, जिनबिम्बों की शोभा न्यारी ।।
भावसहित जो पूजें ध्यावें, वे अपने सौभाग्य बढ़ावें।
यश कीर्ति बल वैभव पावें, ओज तेज कांति उपजावें ।।
सर्वमान्य जग पदवी पावें, रण में विजयश्री ले आवें।
हों अनुकूल स्वजन परिवारी, सेवक होंवे आज्ञाकारी ।।
अर्चा के शुभ भाव बनाएँ, चरण-शरण में हम भी आएँ।
शांतिमय हो जगती सारी, यही भावना रही हमारी ।।
जब तक हम शिवपद न पाएँ, चरण आपके हृदय सजाएँ।
'विशद' भाव से तव गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
पढ़े सुने जो भाव से, तीनों योग सम्हार ।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, बढ़े पुण्य का कोष।
अन्तिम शिव पदवी मिले, जीवन हो निर्दोष ।।

New
20-6-2012

श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।
प्रभु हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीष झुकाते।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।
प्रभु तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।
प्रभु की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमीं नाशा पर।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन शुदि पाए।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तव मन हर्षाया।
पग में कछुआ चिह्न दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।

बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभु के मन वैराग्य जगाए।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभु जी को पधराए।
भूपति कई प्रभु को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभु ने सार्थक नाम बनाया।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।
वेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।
गणधर प्रभु अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आईं।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।
फाल्गुन वदी वारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

New
20-6-2012

श्री नमिनाथ चालीसा

दोहा- नव देवों के चरण में, नव कोटि के साथ।
गुण गाते नमिनाथ के, चरण झुकाकर माथ।।
तव चरणों में हे प्रभु, जोड़ रहे द्वय हाथ।
चालीसा गाते यहाँ, विनय भाव करे साथ।।

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी का जानो, जिसमें जम्बूद्वीप बखानो।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, दक्षिण में सोहे मनहारी।।
वंगदेश जानो शुभ भाई, मिथिला नगरी शुभ कहलाई।
विजयराज राजा शुभ गाए, वंश इक्ष्वाकु अनुपम पाए।।
वप्रिला रानी जिनकी गाई, धर्म परायण जो कहलाई।
अश्विन वदी दूज शुभ जानो, पिछला पहर रात का मानो।।
शुभ नक्षत्र अश्विनी पाए, कश्यप गोत्री आप कहाए।
अपराजित से चयकर आए, माँ के गर्भ को धन्य बनाए।।
दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, शुभ नक्षत्र स्वाति पहिचानो।
जन्म मेष राशि में पाया, राशि स्वामी मंगल गाया।।
घंटा नाद हुआ तब भारी, देवलोक में अतिशयकारी।
स्वयं इन्द्र ऐरावत लाया, सुर परिवार साथ में आया।।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, जन्म कल्याणक श्रेष्ठ मनाया।
नीलकमल शुभ लक्षण जानो, स्वर्ण वर्ण तन का पहिचानो।।
दस हजार वर्षों की स्वामी, आयु पाये हैं शिवगामी।
समचतुरस्र तन पाए भाई, पन्द्रह धनुष रही ऊँचाई।।
सहस्राष्ट लक्षण शुभकारी, रक्त श्वेत जानो मनहारी।
जाति स्मरण प्रभु को आया, मन में तव वैराग्य समाया।।
दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, संध्याकाल समय पहिचानो।

मिथिला नगरी श्रेष्ठ बताई, उत्तर कुरु पालकी गाई।।
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, चम्पक वृक्ष श्रेष्ठ बतलाया।
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई।।
एक सहस राजा संग आये, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
दो उपवास प्रभु जी कीन्हें, शुभ क्षीरान्न आहार जो लीन्हें ।।
नगर वीरपुर अनुपम गाया, दाता राजा दत्त कहाया।
मगसिर शुक्ल एकादशि जानो, संध्याकाल समय पहिचानो।।
प्रभु जी मिथिला नगरी आए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, मौलश्री शुभ तरु कहलाया।।
समवशरण आ देव बनाए, दो योजन विस्तार कहाए।
शुभ पद्मासन प्रभु का जानो, सोलह सौ केवली पहिचानो।।
संघ में साधु संख्या भाई, बीस हजार श्रेष्ठ बतलाई।
गणधर संख्या सत्रह जानो, सुप्रभ प्रथम वाणी पहिचानो।।
एक लाख श्रावक भी आए, विजय प्रमुख श्रोता कहलाए।
यक्ष कहा विद्युतप्रभ भाई, चामुण्डी यक्षी कहलाई।।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, कूट मित्रधर अनुपम पाए।
एक माह पूरब से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।।
वैशाख कृष्ण चतुर्दशी जानो, अंतिम पहर रात का मानो।
खड्गासन से मोक्ष सिधाए, सहस मुनि सह मुक्ति पाए।।
जिनवर का हम ध्यान लगाएँ, हृदय कमल पर उन्हें बिठाएँ।
हम भी मुक्ति पद को पाएँ, 'विशद' भावना उर से भाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े-सुने उर धार।
सुख-शांति सौभाग्य पा, पावें भव से पार।।
नमिनाथ भगवान का, करने से गुणगान।
आशा मन की पूर्ण हो, शीघ्र होय कल्याण।।

New
20-6-2012

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, करते विशद प्रणाम।
नेमिनाथ का भाव से, ले सुखकारी नाम।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
प्रभु हैं जन–जन के हितकारी, ज्ञानी ध्यानी जग उपकारी।।
तीन काल तिय जग के ज्ञाता, जन–जन का प्रभु तुमसे नाता।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, नर जीवन का सार बताया।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुःख हरते।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शौरीपुर में जन्में भाई ।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर–नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, सची ने प्रभु को गोद बिठाया।।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालीस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।।
कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोइ अनिरुद्ध के देते नारे ।।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।

ऊँगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।।
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम–रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैया नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुंचे फिर भाई।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।
कृष्ण ने तब की मायाचारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।।
नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलबाया।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।।

प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया ! वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
सवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
सौख्य अनन्त प्रभु ने पाया, नर जीवन का सार बताया।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

सोरठा- चालीसा चालीस दिन में, जो पढ़ता 'विशद'।
चरण झुकाए शीश, विनय भाव के साथ जो।।

सोरठा- शांति मिले विशेष, रोग शोक चिंता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

* * *

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच का, जपूँ निरन्तर नाम।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गो, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिक्षेत्र में ध्यान लगाए।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।

New
20-6-2012

पद्मावती ने फण फैलाय, उस पर प्रभुजी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।
चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।
गणधर दश प्रभु के बतलाएं, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।
योग निरोध प्रभुजी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख जाते।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बनें कई हैं मनहारी।
बड़ा गाँव चँवलेश्वर जानो, विराटनगर नैनागिर मानो।।
नागफणी येलोरा गाया, मक्सी अहिक्षेत्र बतलाया।
सिरपुर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई।।
तीर्थ अडिण्दा भी कहलाए, भरत सिन्धु जह स्वर्ग सिधाए।
'विशद' तीर्थ कई है शुभकारी, जिनके पद में ढ़ोक हमारी।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान प्राप्त कर, पावें शिवपद भोग।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धाचार्य शुभ, उपाध्याय जिन संत।
पार्श्व प्रभु के चरण में, नमन अनंतानंत।।

(तर्ज- नित देव मेरी आत्मा...)

जिनराज पारसनाथ स्वामी, लोक में पावन रहे।
संसार में जो भव्य जीवों, के तरण-तारण कहे।।
कर ध्यान आतम का प्रभु जी, नाश कर अज्ञान का।
अनुपम अलौकिक आपने, दीपक जलाया ज्ञान का।।1।।
अश्वसेन के कुँवर है जो, मात वामा जानिए।
नगर काशी के अधिपति, आप को पहिचानिए।।
शुभ दोज वदि वैशाख तिथि को, गर्भ में आये प्रभो !।
छह माह पहले से नगर में, हर्ष छाये थे विभो !।।2।।
तब रत्न वृष्टि दिव्य करके, देव हर्षाए अहा।
शुभ पोष कृष्ण एकादशी को, जन्म का उत्सव रहा।।
तब इन्द्र ऐरावत पे आके, प्रभो को भी ले गया।
शुभ न्हवन मेरु पर कराया, हुआ तव उत्सव नया।।3।।
शुभ नाग लक्षण दाएँ पद में, इन्द्र ने देखा तभी।
तब नाम पारस बोलकर, जयकार शुभ कीन्हे सभी।।
युवराज पारस सैर करने को, सघन वन में गये।
जाके वहाँ देखे प्रभु में, विशद कई अचरज नये।।4।।
पञ्चाग्नि तप में जीव जलते, देखकर प्रभु ने कहा।
रे तापसी ! जीवों को अग्नि, में जलता जा रहा।।
लेकर कुल्हाड़ी तापसी ने, लक्कड़े फाड़े सभी।
अध जले तब नाग निकले, लक्कड़ों से वह सभी।।5।।
नवकार नागों को सुनाया, प्रभु ने यह जानिए।
धरणेन्द्र व पद्मावति हुए, आप यह सच मानिए।।
संसार की यह दशा लखकर, प्रभु संयम धर लिए।

तब पौष एकादशी कृष्णा, सब परिग्रह तज दिए।।6।।
धनदत्त के गृह क्षीर का, आहार प्रभु पारस लिये।
देवों ने आकर पञ्च आश्चर्य, उस समय आकर किये।।
जब सघन वन में ध्यान करते, थे प्रभु यह मानिए।
तब धूमकेतु देव ने, उपसर्ग कीन्हा मानिए।।7।।
की धूल अग्नि पत्थरों की, वृष्टि आके देव ने।।
तब ध्यान आतम का किया था, पार्श्व प्रभु जिनदेव ने।।
अहिक्षेत्र में यह हुई घटना, आप यह सुन लीजिए।
जिन पार्श्व प्रभु का वहाँ जाकर, आप दर्शन कीजिए।।8।।
उपसर्ग वह धरणेन्द्र, पद्मावति ने टाला तभी।
जयकार करने लगे सुर-नर, प्रभु की आके सभी।।
शुभ चैत कृष्णा चौथ प्रभु जी, ज्ञान केवल पा लिए।
तव इन्द्र आये सौ वहाँ पर, ढ़ोक चरणों में दिए।।9।।
कर समवशरण रचना निराली, महत् उत्सव भी किया।
ॐकार ध्वनि में पार्श्व ने, संदेश मुक्ति का दिया।।
सम्मेदगिरि पहुँचे वहाँ से, मोक्ष पाए जिन प्रभो !।
श्रावण सुदी साते को जिनवर, पा गये शिवपद विभो !।।10।।
है प्रार्थना इतनी प्रभु, अब शरण हमको दीजिए।
हे नाथ ! अपने भक्त को भी, आप सा कर लीजिए।।
विश्वास है इतना प्रभु न, भक्त को ठुकराओगे।
अतिशीघ्र मुक्तिपथ दिखाकर, सिद्धि तुम दिलवाओगे।।11।।
जिनबिम्ब जग में पार्श्व प्रभु के, छाए हैं कई श्रेष्ठतम।
शुभ दर्श करके पार्श्व जिन का, नाश होता मोहतम।।
हम भावना भाते स्वयं, जिनदेव का दर्शन मिले।
मेरे हृदय में पुष्प श्रद्धा, का विशद अनुपम खिले।।12।।

दोहा- चालीसा जिन पार्श्व का, पढ़े जो चालिस बार।
सुख शांति सौभाग्य पा, होय विशद भव पार।।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री महावीर चालीसा

दोहा- सिद्ध और अरिहंत का, है सुखकारी नाम।
आचार्योपाध्याय साधु के, करते चरण प्रणाम।।
वर्धमान सन्मति तथा, वीर और अतिवीर।
महावीर की वन्दना, से बदले तकदीर।।

चौपाई

जय-जय वर्धमान जिन स्वामी, शांति मनोहर छवि है नामी।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
पुरुषोत्तम विमान से आए, माँ को सोलह स्वप्न दिखाए।
राजा सिद्धारथ कहलाए, कुण्डलपुर के भूप कहाए।।
माता त्रिशला के उर आए, नाथ वंश के सूर्य कहलाए।
षष्ठी शुक्ल आषाढ़ कहाए, गर्भ में चयकर के प्रभु आए।।
चैत शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभु ने जिस दिन पाया।
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, पग में चिह्न शेर का पाया।।
वर्द्धमान तब नाम बताया, जयकारे से गगन गुँजाया।
पलना प्रभु का मात झुलाये, ऋद्धिधारी मुनिवर आए।।
मन में प्रश्न मुनि के आया, जिसका समाधान न पाया।
देख प्रभु को हल कर लीन्हा, सन्मति नाम प्रभु का दीन्हा।।
मित्रों संग क्रीड़ा को आए, सभी वीरता लख हर्षाए।
देव परीक्षा लेने आया, नाग का उसने रूप बनाया।।
भागे मित्र सभी भय खाये, किन्तु प्रभु नहीं घबराए।
पैर की ठोकर सिर में मारी, देव तभी चीखा अति भारी।।
उसने चरणों ढ़ोक लगाया, वीर नाम प्रभु का बतलाया।
युवा अवस्था प्रभु जी पाए, करके सैर नगर में आए।।
हाथी ने उत्पात मचाए, मद उसका प्रभु पूर्ण नशाए।
प्रभु अतिवीर नाम को पाए, सभी प्रशंसा कर हर्षाए।।

New
20-6-2012

बाल ब्रह्मचारी कहलाए, तीस वर्ष में दीक्षा पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, तब मन में वैराग्य समाया।।
माघ कृष्ण दशमी दिन पाया, नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन गाया।
तृतीय भक्त प्रभुजी पाए, दीक्षा धर एकाकी आए।।
स्वर्ण रंग प्रभु का शुभ पाया, सप्त हाथ अवगाहन पाया।
प्रभु नाथ वन में फिर आए, साल तरु तल ध्यान लगाए।।
कामदेव रति वन में आए, जग को जीता ऐसा गाए।
रति ने प्रभु का दर्शन पाया, कामदेव से वचन सुनाया।।
इन्हें जीत पाए क्या स्वामी, नग्न खड़े जो शिवपथ गामी।
प्रभु को ध्यान से खूब डिगाया, किन्तु उन्हें डिगा न पाए।।
कामदेव पद शीश झुकाया, महावीर तव नाम बताया।
दशें शुक्ल वैसाख बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।
ऋजुकूला का वीर बताया, शाल वृक्ष वन खण्ड कहाया।
समवशरण इक योजन जानो, योग निवृत्ति अनुपम मानो।।
कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, महावीर जिन मोक्ष सिधाए।
प्रातःकाल रहा शुभकारी, ग्यारह गणधर थे मनहारी।।
गौतम गणधर प्रथम कहाए, नाम इन्द्रभूति शुभ पाए।
गणधरजी ने ध्यान लगाया, सायं केवलज्ञान जगाया।।
प्रभु शासन नायक कहलाए, श्रेष्ठ सिद्धान्त लोक में छाए।
प्रतिमाएँ हैं अतिशयकारी, वीतरागमय मंगलकारी।।
चाँदनपुर महिमा दिखलाए, टीले में गौ दूध झराए।
ग्वाले के मन अचरज आया, उसने टीले को खुदवाया।।
वीर प्रभु के दर्शन पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।
पावागिरि ऊन कहलाए, वहाँ भी कई अतिशय दिखलाए।।
यही भावना रही हमारी, जनता सुखमय होवे सारी।।
चरण कमल में हम सिरनाते, 'विशद' भाव से शीश झुकाते।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़ने से सुख-शांति हो, मिले मोक्ष का द्वार।।

सहस्रनाम-चालीसा

दोहा- अर्हत्सिद्धाचार्य पद, उपाध्याय जिन संत।
सहस्रनाम जिनराज के, नमूँ अनन्तानन्त।।

(चौपाई छन्द)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका नहीं है कोई अंत।
जिसके मध्य है लोकाकाश, भरा है छह द्रव्यों से खास।।
ऊर्ध्व अधो अरु मध्य प्रधान, तीन लोक कहते भगवान।
मध्य लोक में जम्बू द्वीप, मेरु जम्बू वृक्ष समीप।।
जम्बू द्वीप घातकी खण्ड, पुष्करार्द्ध भी रहा अखण्ड।
भरतैरावत और विदेह, क्षेत्र कर्म भूमि हैं ऐह।
आर्य खण्ड में रहते आर्य, ऐसा कहते जैनाचार्य।।
उत्सर्पण अवसर्पण काल, भरतैरावत रहे त्रिकाल।
दुषमा सुषमा काल विशेष, जिसमें चौबीस बनें जिनेश।
जिन विदेह में रहे त्रिकाल, विद्यमान रहते हर हाल।।
जो भी पुण्य कमाय अतीव, उसका फल वह पावे जीव।
भव्य भावना सोलह भाय, जीव वही यह पदवी पाय।।
तीर्थंकर प्रकृति का बंध, जो कषाय करते हैं मंद।
सम्यक् दृष्टि जीव महान, केवली द्विक के पद में आन।।
मिलता है जब कोई निमित्त, भोगों से उठ जाता चित्त।
भव भोगों से होय विरक्त, शुभ भोगों में हो अनुरक्त।।
सत् संयम पाते शुभकार, लेते महाव्रतों को धार।
कर्म निर्जरा करें महान, निज आतम का करके ध्यान।।
क्षायक श्रेणी को फिर पाय, अपना केवलज्ञान जगाय।
त्रिभुवन चूड़ामणि बन जाय, तीर्थंकर के गुण प्रगटाय।।
क्षायिक नव लब्धि कर प्राप्त, बनते जिन तीर्थंकर आप्त।

New
20-6-2012

चिन्तित चिंतामणि कहलाय, कल्पतरू फल वांछित दाय।।
बनते समवशरण के ईश, इन्द्र झुकाते पद में शीश।
अनन्त चतुष्टय पाते नाथ, पञ्च कल्याणक भी हों साथ।।
तीन गति से आते जीव, पुण्य कमाते वहा अतीव।
दिव्य देशना सुनके लोग, मुक्ति पथ का पाते योग।।
भक्ति को आते शत् इन्द्र, सुर-नर-पशु आते अहमिन्द्र।
परम पिता जगती पति ईश, ऋद्धिधर हे नाथ ! ऋशीष।।
युग दृष्टा प्रभु रहे महान, तीर्थोन्नायक हैं भगवान।
वाणी में जैनागम सार, अमृत रस की बहती धार।।
भक्त आपके आते द्वार, करते हैं निशदिन जयकार।
करने से प्रभु का गुणगान, होती है कर्मों की हान।।
महिमा गाकर के सब देव, हर्षित होते सभी सदैव।
हम भी महिमा गाते नाथ, चरणों झुका रहे हैं माथ।।
विविध नाम से है गुणगान, सहस्रनाम स्त्रोत महान।
सार्थक नाम मयी पाठ, पढ़ने से हों ऊँचे ठाठ।।
सुख-शांति का है आधार, प्राणी पाते जग उद्धार।
सहस्रनाम कहलाए स्त्रोत, विशद धर्म का है जो स्रोत।।
श्रीमान् आदि सहस्र नाम, को करते हम सतत् प्रणाम।
पाठ किए हो ज्ञान प्रकाश, विशद गुणों का होय विकास।।
वन्दन करते हम शत् बार, पाने भवोदधि से पार।
मेरा हो आतम कल्याण, पावें हम भी पद निर्वाण।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, सहस्रनाम का पाठ।
पढ़ते हैं जो भाव से, होते ऊँचे ठाठ।।
ऋद्धि-सिद्धि आनन्द हो, शांति मिले अपार।
'विशद' ज्ञान पाके मिले, मुक्ति वधू का पार।।

महामृत्युञ्जय चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
मृत्युञ्जय हम पूजते, चरणों में धर शीश।।

चौपाई

कर्म घातिया चार नशाए, अतः आप अर्हत् कहलाए।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, दर्शन ज्ञान-वीर्य सुख पाए।।
दोष अठारह पूर्ण नशाए, छियालिस गुणधारी कहलाए।
चौतिस अतिशय जिनने पाए, प्रातिहार्य आठों प्रगटाए।।
समवशरण शुभ देव रचाए, खुश हो जय-जयकार लगाए।
समवशरण की शोभा न्यारी, उससे भी रहते अविकारी।।
देव शरण में प्रभु के आते, चरण-कमल तल कमल रचाते।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, सब प्रकार की आपद खोवे।।
भक्त शरण में जो भी आते, चतुर्दिशा से दर्शन पाते।
गगन गमन प्रभु जी शुभ पाते, प्राणी मैत्री भाव जगाते।।
प्रभो ! ज्ञान के ईश कहाए, अनिमिष दृग प्रभु के बतलाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाते, सुर-नर-पशु सुनकर हर्षाते।।
मृत्युञ्जय जिन प्रभु कहाते, जीत मृत्यु को शिव पद पाते।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख पाते, वीर्य अनन्त प्रभु प्रगटाते।।
सिद्ध सनातन आप कहाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
अनुपम शिवसुख पाने वाले, ज्ञान शरीरी रहे निराले।।
नित्य निरंजन जो अविनाशी, गुण अनन्त की हैं प्रभु राशि।
तुमने उत्तम संयम पाया, जिसका फल यह अनुपम गाया।।
रत्नत्रय पा ध्यान लगाया, तप से निज को स्वयं तपाया।
कई ऋद्धियाँ तुमने पाईं, किन्तु वह तुमको न भाईं।।
उनसे भी अपना मुख मोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा।

New
20-6-2012

सहस्र आठ लक्षण के धारी, आप बने प्रभु मंगलकारी।।
सहस्र आठ शुभ नाम उपाए, सार्थक सारे नाम बताए।
नाम सभी शुभ मंत्र कहाए, जो भी इन मंत्रों को ध्याए।।
सुख-शांति सौभाग्य जगाए, अपने सारे कर्म नशाए।
विषय भोग में नहीं रमाए, रत्नत्रय पा संयम पाए।।
तीन योग से ध्यान लगाए, निज स्वरूप में वह रम जाए।
संवर करे निर्जरा पावे, अनुक्रम से वह कर्म नशावे।।
बीजाक्षर भी पूजें ध्यावें, जिनपद में नित प्रीति बढ़ावें।
कभी मंत्र जपने लग जाए, कभी प्रभु को हृदय बसाए।।
स्वर व्यंजन आदि भी ध्याए, अतिशय कर्म निर्जरा पाए।
पुण्य प्राप्त करता शुभकारी, शिवपथ का कारण मनहारी।।
इस भव का सब वैभव पाए, उसके मन को वह न भाए।
तजकर जग का वैभव सारा, जिनने भेष दिगम्बर धारा।।
वह बनते त्रिभुवन के स्वामी, हम भी बने प्रभु अनुगामी।
यही भावना रही हमारी, कृपा करो हम पर त्रिपुरारी।।
मृत्युञ्जय हम भी हो जाएँ, इस जग में अब नहीं भ्रमाएँ।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का नाथ सहारा।।
शिव पद जब तक ना पा जाएँ, तब तक तुमको हृदय सजाए।
नित-प्रति हम तुमरे गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
सुत सम्पत्ति सुगुण पा, होवे इन्द्र समान।
मृत्युञ्जय होके 'विशद', पावे पद निर्वाण।।

* * *

श्री गिरनारजी चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल वन्दन बारम्बार।
तीन लोक में पूज्य है, तीर्थ क्षेत्र गिरनार।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
यही भावना है 'विशद', बढ़ें मोक्ष की ओर।।

(चौपाई)

जय-जय सिद्धक्षेत्र गिरनार, जिसकी महिमा अपरम्पार।
है सौराष्ट्र देश शुभकार, जूनागढ़ जिसमें मनहार।।
तीन कोश जाने के बाद, दरवाजा फिर नदी अगाध।
उत्तर दक्षिण पर्वत दोय, जिसमें बहता उज्ज्वल तोय।।
नदी मध्य कई कुण्ड सुजान, दोनों तट मंदिर पहिचान।
वैष्णव साधु के स्थान, भिक्षा वृत्ति वाले मान।।
एक कोश आगे को जाय, जल से पूरित नाला आय।
श्रावक जन करते स्नान, मृगी कुण्ड फिर आगे जान।।
वैष्णव के तीरथ स्थान, पूजा भक्ति करें प्रधान।
डेढ़ कोष आगे को जाय, फिर छोटे पर्वत को पाय।।
तीन कुण्ड है जहाँ महान्, युग मंदिर जिन के पहिचान।
दो मंदिर जिनवर के जान, श्वेताम्बर के बहुत प्रमान।।
बनी धर्मशाला शुभकार, जल का कुण्ड है अपरम्पार।
दर्शन करके आगे जाय, द्वितिय टोंक का दर्शन पाय।।
मोक्ष गये अनिरुद्ध कुमार, चरण बने हैं अपरम्पार।
भक्त वंदना करते आन, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।
तृतिय टोंक का फिर स्थान, छतरी बनी है जहाँ महान्।
पाए मुक्ति शम्बुकुमार, पद में वन्दन बारम्बार।।
भक्त करें शुभ मंगलगान, नत हो पद पंकज में आन।
आगे चढ़े बनाके भाव, फिर मिलता है कठिन चढ़ाव।।

New
20-6-2012

बनी है चौथी टोंक विशाल, चढ़के प्राणी हों बेहाल।
श्रावक फिर भी श्रद्धावान, चढ़के करते प्रभु गुणगान।।
मुक्ति गये प्रद्युम्न कुमार, बनकर के स्वामी अनगार।
आगे पञ्चम टोंक विशेष, मुक्ति गये श्री नेमि जिनेश।।
चरण बने प्रभु के शुभकार, जिनपद वन्दन बारम्बार।
छतरी वहाँ बनी थी खास, बिजली से हो गई विनाश।।
हरा भरा पर्वत मनहार, रहा लोक में अतिशयकार।
गिरि की महिमा का नहिं पार, भव सिन्धु से करें जो पार।।
ऊँचा पर्वत रहा महान्, नहीं तीर्थ है और समान।
तीर्थ वन्दना करके दास, करने आते पूरी आस।।
कर्मों का हो पूर्ण विनाश, पा जाएँ हम शिवपुर वास।
पच्चिस सौ सैंतिस निर्वाण, माघ शुक्ल तृतिया शुभमान।।
भक्त करें भक्ती शुभकार, पावें भक्ती का उपहार।
रहा आम्रवन जहाँ विशेष, दीक्षा धारे नेमि जिनेश।।
गिरि की महिमा का नहीं पार, माने सुर गुरु भी जब हार।
बत्तिस कोढ़ी मुनि सौ सात, कर्म घातिया कीन्हें घात।।
अविकारी बनके जिन संत, किए कर्म का अपने अन्त।
यात्री आकर के शुभ खास, बनते हैं चरणों के दास।।
पूजा वन्दन करे महान्, भक्ति अर्चा करें प्रधान।
भक्ती का पाके आधार, हो जाते हैं भव से पार।।
वन्दन करते बारम्बार, अब भव सिन्धु का पाने द्वार।
करते हैं जो प्रभु का जाप, उनके कटते हैं पाप।।

दोहा- चालीसा गिरनार का, गिर के ऊपर जाय।
भक्ति भाव से जो पढ़े, सुख-सम्पत्ती पाय।।
रोग-शोक का नाशकर, पावे सुन्दर देह।
'विशद' मोक्ष पद पायगा, भक्त नहीं सन्देह।।

श्री नवग्रह शांति चालीसा

दोहा- नव देवों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार।।
चालीसा नवग्रह यहाँ, पढ़ते योग सम्हार।
सुख-शांति सौभाग्य पा, करें आत्म उद्धार।।

(चौपाई)

नवग्रह नभ में रहने वाले, सारे जग से रहे निराले।
रवि शशि मंगल बुध गुरु गाये, शुक्र शनि राहू-केतु बताए।।
कर्म असाता उदय में आए, तव ये नवग्रह खूब सताए।
कभी व्याधि लेकर के आते, कभी उदर पीड़ा पहुँचाते।।
आँख कान में दर्द बढ़ाते, मन में बहु बेचैनी लाते।
कभी होय व्यापार में हानी, कभी करें नौकर मनमानी।।
कभी चोर चोरी को आवें, छापा मार कभी आ जावें।
कभी कलह घर में बढ़ जावे, कभी देह में रोग सतावें।।
बेटा बेटी कही न माने, अपने अपना न पहिचाने।
प्राणी संकट में पड़ जावे, शांति को ना राह दिखावे।।
ऐसे में भी प्रभु की भक्ति, हर कष्टों से देवे मुक्ति।
ग्रहारिष्ट रवि जिसे सताए, पद्म प्रभु को वह नर ध्याये।।
विमलानन्त धर्म अर पाए, शांति कुन्थु नमि वीर कहाए।
गुरु अरिष्ट ग्रह शांति प्रदायी, अष्ट जिनेन्द्र रहे सुखदायी।।
ऋषभाजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति सुपार्श्व विमल नृप नन्दन।
जिन सुपार्श्व शीतल जिन स्वामी, गुरु ग्रह शांति कारक स्वामी।।
शुक्र अरिष्ट शांति कर गाए, पुष्पदन्त जिनराज कहाए।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति दाता, श्री मुनिसुव्रत रहे विधाता।।

New
20-6-2012

राहू ग्रह नाशक कहलाए, नेमिनाथ तीर्थंकर गाए।
मल्लि पार्श्व का ध्यान जो करते, केतू ग्रह की बाधा हरते।।
जो चौबिस तीर्थंकर ध्याए, जीवन में वह शांति पाए।
उसकी आधि व्याधि क्षय जाए, ग्रह पीड़ा से शांति उपाए।।
गगन गमन ग्रह करते भाई, मानव को होते दुखदायी।
जन्म लग्न राशि को पाए, मानव को ग्रह बड़ा सताए।।
ज्ञानी जन उस ग्रह के स्वामी, तीर्थंकर को भजते नामी।
ग्रहहारी दिन जिन को ध्याएँ, पूजा कर सौभाग्य जगाएँ।।
करें आरती मंगलकारी, विशद भाव से शुभ मनहारी।
चालीसा चालिस दिन गाए, मंत्र जाप भी करते जाएँ।।
मंगलमयी विधान रचाएँ, शांति भाव से ध्यान लगाएँ।
अन्तिम श्रुतकेवली गाए, भद्रबाहु स्वामी कहलाए।।
नवग्रह शांति स्तोत्र रचाए, चौबीसों जिनवर को ध्याएँ।
शान्त्यर्थ शुभ शांतिधारा, भवि जीवों बने सहारा।।
नौ तीर्थंकर नवग्रह हारी, कहलाए हैं मंगलकारी।
चन्द्रप्रभु वासुपूज्य बताए, मल्लि वीर सुवधि जिन गाए।।
शीतल मुनिसुव्रत जिन स्वामी, नेमि पार्श्व जिन अन्तर्यामी।
नवग्रह शांति जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।
'विशद' भावना हम ये भाएँ, सुख-शांति सौभाग्य जगाएँ।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति से लोग।
रोग-शोक क्लेशादि का, रहे कभी न योग।।
नवग्रह शांति के लिए, ध्याते जिन चौबीस।
सुख-शांति आनन्द हो, 'विशद' झुकाते शीश।।

आचार्य श्री विशदसागरजी चालीसा

परमेष्ठी को नमन् कर, नव देवों के साथ।
लिखने का साहस करें, चरण झुकाएँ माथ।।
रोग-शोक का नाश कर, पाएँ मुक्ती धाम।
विशद सिंधु गुरुवर तुम्हें, शत्-शत् बार प्रणाम।।

चौपाई

चउ अनुयोगों के गुरु ज्ञाता, सूरी तुम जन-जन के त्राता।
भक्तों के तुम (गुरु) देव कहाते, श्रुत अमृत की धार बहाते।।
जय-जय छत्तिस गुण के धारी, भविजन के तुम हो हितकारी।
भाव सहित तुमरे गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते।।
नाथूरामजी पिता तुम्हारे, इंदर माँ की नयन के तारे।
छोड़ सभी झंझट संसारी, बन गए आप बाल ब्रह्मचारी।।
आठ नवम्बर बानवें आया, ब्रह्मचर्य व्रत तव अपनाया।
एक वर्ष तक रहे विरागी, संयम की मन में सुध जागी।।
स्वारथ का संसार है सारा, मिला न अब तक कोई सहारा।
दीन-हीन बालक को गुरुवर, कृपा कीजिये भव्य जानकर।।
ऐलक पद तुमने अपनाया, पाँचें मार्ग शीष सित पाया।
सन् उन्नीस सौ छियानवें आया, आठ फरवरी का दिन पाया।।
तन मन से हो गये अविकारी, जैसे हो चंदन की क्यारी।
भरत सिंधु के दर्शन पाये, तन मन में गुरु अति हर्षाये।।
श्री गुरुवर ने दिया सहारा, भव्यों का करने उद्धारा।
भक्तों को सद्ज्ञान सिखाओ, मोक्षमार्ग पर उन्हें बढ़ाओ।।
तुमको है आशीष हमारा, जीवन हो मंगलमय सारा।
गुरुवर मालपुरा में आए, सबने गुरु के दर्शन पाए।।
मन में हर्ष हुआ था भारी, गद्गद् हुई थी जनता सारी।
तेरह फरवरी का दिन पाया, दो हजार सन् पाँच कहाया।।
मुनिवर से आचार्य बनाया, गुरुवर की शुभ पाई छाया।
फिर गुरुवर से आशीष पाए, दीक्षा देकर शिष्य बनाए।।

विशद चालीसा संग्रह

एक मुनि दो क्षुल्लक भाई, उनने फिर शुभ दीक्षा पाई।
जग में जितने पद कहलाये, सारे ही निष्फल कहलाये।।
मोक्षमार्ग का पथ पा जाएँ, तव चरणों में हम शीश झुकाये।
ज्ञानवीर हो ध्यान वीर हो, मुनि श्रावक के महावीर हो।।
जीवन के आदर्श तुम्हीं हो, प्रेय श्रेय भगवंत तुम्ही हो।
क्षमामूर्ति गुरुदेव हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।।
वीतराग मुद्रा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
जपने से गुरु नाम तुम्हारा, भव सिन्धु का मिले किनारा।।
दुनियाँ में नहिं कोई हमारा, दे दो गुरुवर हमें सहारा।
मात-पिता तुमको ही माना, परम ब्रह्म परमातम जाना।।
धर्म-कर्म के तुम हो ज्ञाता, सूरी तुम हो भाग्य विधाता।
जग में सबको सब कुछ देते, बदले में तुम कुछ न लेते।।
सरस्वती की है यह माया, होनहार विद्वान बनाया।
पञ्च महाव्रत पालन करते, दशधर्मों को जो आचरते।।
चिंतन मंथन अनुभव द्वारा, भक्तों का करते उद्धारा।
चरण शरण में जो भी आता, मन वांछित फल तब पा जाता।।
चरणों की रज है सुखकारी, दुख दरिद्रा की नाशन हारी।
तव भक्ती का मिला सहारा, कथन किया लघु शब्दों द्वारा।।
हम है दीन हीन संसारी, लिखने की क्या शक्ति हमारी।
भक्ति करने हम भी आए, नहीं भेंट में कुछ भी लाए।।
भाव समर्पित करने आए, नहीं भेंट में कुछ भी लाए।
'आस्था' भाव समर्पित करते, तव चरणों में मस्तक धरते।।

दोहा- विशद चालीसा जो पढ़े, विशद भक्ति के साथ।
विशद ज्ञान पा कर बनें, विशद लोक का नाथ।।
विशद ज्ञान पावे सदा, करें विशद कल्याण।
विशद लोक में जा बसे, बने विशद धीमान।।

- ब्र. आस्था दीदी (संघस्थ)

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

विशद चालीसा संग्रह

New
20-6-2012

New
20-6-2012

विशद चालीसा संग्रह

New
20-6-2012

विशद चालीसा संग्रह

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

विशद चालीसा संग्रह

New
20-6-2012

विशद चालीसा संग्रह

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

New
20-6-2012

रत्नत्रय पूजा

(स्थापना)

चतुर्गति का कष्ट निवारक, दुःख अग्नि को शुभ जलधार।
शिवसुख का अनुपम है मारग, रत्नत्रय गुण का भण्डार।।
तीन लोक में शांति प्रदायक, भवि जीवों को एक शरण।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-नन्दीश्वर)

ले हेम कलश मनहार, प्रासुक नीर भरा।
देते हम जल की धार, नशे मम जन्म-जरा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की गंध अपार, शीतल है प्यारा।
है भवतप हर मनहार, अनुपम है प्यारा।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह धवल अनूप, हम धोकर लाए।
अक्षत पाएँ स्वरूप, अर्चा को आए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाँति-भाँति के फूल, उत्तम गंध भरे।
हों कामबाण निर्मूल, निर्मल चित्त करे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बना रसदार, मीठे मनहारी।
जो क्षुधा रोग परिहार, के हों उपकारी।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, तम को दूर करे।
हो मोह महातम नाश, मिथ्या मति हरे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी ले धूप सुवास, दश दिश महकाए।
हों आठों कर्म विनाश, भावना यह भाए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, अनुपम थाल भरे।
हो मुक्ति फल दातार, भव से मुक्त करे।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।
रत्नात्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल।।

मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा।।
प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन है, करना तत्त्वों में श्रद्धान।
निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्।।
श्रद्धाहीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सभी व्यर्थ।।
गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपहार।।
ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान्।
पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण।।
वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।
निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।।
निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान।
कर्मों का संवर हो जिससे, आश्रव का हो पूर्ण विनाश।।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश।
रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।।
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त।

New
20-6-2012

अन्तर्मन की यही भावना, रत्नत्रय का होय विकास।।
कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास।

दोहा- तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।
अनुक्रम से उनको मिला, विशद मोक्ष का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

सम्यक् दर्शन पूजा

(स्थापना)

शंकादि वसु दोष हैं, अरु रही मूढ़ता तीन।
छह अनायतन आठ मद, पच्चिस दोष विहीन।।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति, धारे सद् श्रद्धान्।
ज्ञान और चारित्र में, सम्यक् दर्श प्रधान।।
सम्यक् दर्शन श्रेष्ठ है, मंगलमयी महान्।
विशद हृदय में हम करें, जिसका शुभ आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-छन्द)

हम भव-भव रहे दुखारी, मिथ्यामति हुई हमारी।
यह नीर चढ़ाने लाए, भव रोग नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने भव रोग बढ़ाया, न सम्यक् दर्शन पाया।
हम चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाएँ, भव का सन्ताप नशाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जग में रहे अकुलाए, न अक्षय पद को पाए।
अब अक्षय पद प्रगटाएँ, अक्षत यह धवल चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की आश लगाए, तीनों लोकों भटकाए।
अब कामबाण नश जाए, हम फूल चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने व्यंजन कई खाए, सन्तुष्ट नहीं हो पाए।
अब क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह की महिमा न्यारी, मोहित करता है भारी।
हम दीप जलाकर लाए, यह मोह नशाने आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम होता अविकारी, कर्मों से बना विकारी।
हम कर्म नशाने आए, अग्नि में धूप जलाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भटकते आए, न मोक्ष महाफल पाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरणों श्रेष्ठ चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चतुर्गति भटकाए, न पद अनर्घ शुभ पाए।
यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- श्रेष्ठ कहा त्रय लोक में, सम्यक् दर्श त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, जिसकी हम जयमाल।।

सम्यक्दर्शन रत्न श्रेष्ठ है, मिथ्या मति का करे विनाश।
भेद ज्ञान जागृत करता है, जीव तत्त्व का करे प्रकाश।।1।।
जिन बच में शंका न धारे, लोकाकांक्षा से हो हीन।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति किंचित्, ग्लानि से जो रहे विहीन।।2।।
देव धर्म गुरु के स्वरूप का, निर्णय करते भली प्रकार।
दोष ढाकते गुण प्रगटित कर, हुआ धर्म गुरु के आधार।।3।।
श्रद्धा चारित से डिगते जो, स्थित करते निज स्थान।
संघ चतुर्विध के प्रति मन से, वात्सल्य जो करें महान्।।4।।

धर्म प्रभावना करते नित प्रति, तपकर आगम के अनुसार।
लोक देव पाखंड मूढ़ता, पूर्ण रूप करते परिहार।।5।।
छह अनायतन सहित दोष इन, पच्चिसों से रहे विहीन।
द्रव्य तत्त्व के श्रद्धाधारी, सप्त भयों से रहते हीन।।6।।

दोहा- दर्शन के शुभ आठ गुण, संवेगादि महान।
मैत्री आदि भावना, श्रद्धा के स्थान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् दर्शन लोक में, मंगलमयी महान।
इसके द्वारा भव्य जन, पाते पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

सम्यक् ज्ञान पूजा

(स्थापना)

अन्तर भावों में जगे, जिनके सद् श्रद्धान।
पा लेते हैं जीव वह, अतिशय सम्यक् ज्ञान।।
संशय विभ्रम नाश हो, हो विमोह की हान।
पावन सम्यक् ज्ञान का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - सोलह कारण पूजा)

नीर लिया यह क्षीर समान, करने निज गुण की पहिचान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन श्रेष्ठ सुगन्धिवान, करता है जो शांति प्रदान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत लिए महान, अक्षय पद के हेतु प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित आभावान, करने कामबाण की हान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ठ सरस लाए पकवान, क्षुधा रोग नाशी हम आन।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का होय विनाश, करते अनुपम दीप प्रकाश।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेते धूप अग्नि में आन, कर्म नसे करके निज ध्यान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि लिए महान, मोक्ष महाफल मिले प्रधान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया यह मनहार, पद अनर्घ पाने भव पार।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- सर्व सुखों का मूल है, जग में सम्यक् ज्ञान।
जयमाला गाते परम, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

सम्यक् ज्ञान रत्न मनहारी, भवि जीवों का है उपकारी।
आगम तृतिय नेत्र कहाए, अष्ट अंग जिसके बतलाए।।1।।

शब्दाचार प्रथम कहलाया, शुद्ध पठन जिसमें बतलाया।
अर्थाचार अर्थ बतलाए, शब्द अर्थमय उभय कहाए।।2।।

कालाचार सुकाल बताया, विनयाचार विनय युत पाया।
नाम गुरु का नहीं छिपाना, यह अनिह्नवाचार बखाना।।3।।

New
20-6-2012

नियम सहित उपधान कहाए, आगम का बहुमान बढ़ाए।
द्वादशांग जिनवाणी जानो, जन-जन की कल्याणी मानो।।4।।

ॐकारमय जिनवर गाए, झेले गणधर चित्त लगाए।
आचार्यों ने उनसे पाया, भव्यों को उपदेश सुनाया।।5।।

लेखन किया ग्रन्थमय भाई, वह माँ जिनवाणी कहलाई।
वृहस्पति महिमा को गाए, फिर भी पूर्ण नहीं कह पाए।।6।।

बालक कितना जोर लगाए, सागर पार नहीं कर पाए।
सागर से भी बढ़कर भाई, विशद ज्ञान की महिमा गाई।।7।।

दोहा- पञ्च भेद सद्ज्ञान के, मतिश्रुत अवधि महान।
मनःपर्यय केवल्य शुभ, बतलाए भगवान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् ज्ञान महान है, शिव सुख का आधार।
उभय लोक सुखकर विशद, मोक्ष महल का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

सम्यक् चारित्र पूजा

(स्थापना)

पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विधि चारित्र गाया।
सम्यक् श्रद्धा सहित भाव से, नहीं आज तक अपनाया।।
संवर और निर्जरा का शुभ, ये ही है अनुपम साधन।
सम्यक्चारित्र का करते हम, विशद हृदय में आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - नंदीश्वर)

जिन वचनामृत सम शीतल जल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
जन्म-जरा-मृत्यु का हम भी, रोग नशाने आये हैं।।
सम्यक चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुगन्धित शीतल चंदन, हम घिसकर के लाए हैं।
भव संताप मिटाकर अपना, शिव पद पाने आए हैं।।
सम्यक चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल धवल अखण्डित अक्षय, पद पाने हम आए हैं।
मिथ्यामल हो नाश हमारा, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित निज खुशबू से, चतुर्दिशा महकाए हैं।
विषय वासना नाश हेतु हम, अर्पित करने लाए हैं।।
सम्यक चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश किए जिन क्षुधा रोग का, अर्हत् पदवी पाए हैं।
यह नैवेद्य चढ़ाकर हम भी, वह पद पाने आए हैं।।
सम्यक चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।5।।

New
20-6-2012

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध का नाश किए जिन, केवल ज्ञान जगाए हैं।
अन्तरज्ञान की ज्योति जलाने, दीप जलाकर लाए हैं।।
सम्यक चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, सिद्ध सुपद को पाए हैं।
आठों कर्मनाश हों मेरे, धूप जलाने आए हैं।।
सम्यक चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल अनुपम अक्षय, हम पाने को आए हैं।
श्रेष्ठ सरस फल लिए थाल में, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
सम्यक चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को हम, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
लख चौरासी भ्रमण नाशकर, शिव सुख पाने आए हैं।।
सम्यक चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।
काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तेरह विध चारित्र है, अतिशय पूज्य त्रिकाल।
सम्यक् चारित्र की यहाँ, गाते हम जयमाल।।

(चाल-छन्द)

शुभ सम्यक्चारित्र जानो, तुम रत्न अनोखा मानो।
जो पाँचों पाप नशाए, फिर पंच महाव्रत पाए।।1।।

हो पञ्च समीति धारी, त्रय गुप्ति का अधिकारी।
जो त्रय हिंसा के त्यागी, हैं देशव्रती बड़ भागी।।2।।

मुनि सब हिंसा के त्यागी, विषयों में रहे विरागी।
निज आतम ध्यान लगाते, तब निजानन्द सुख पाते।।3।।

सामायिक संयम धारी, मुनिवर होते अविकारी।
छेदोपस्थापना जानो, व्रत शुद्धि जिससे मानो।।4।।

परिहार विशुद्धि भाई, जिसका अतिशय प्रभुताई।
जब समवशरण में जावे, आठ वर्ष ज्ञान उपजावे।।5।।

मुनिवर फिर संयम पावें, न प्राणी कष्ट उठावें।
वादर कषाय जब खोवे, तब सूक्ष्म साम्पराय होवे।।6।।

उपशम क्षय जब हो जावे, तब यथाख्यात प्रगटावे।
संयम यह पाँचों पाए, वह केवलज्ञान जगाए।।7।।

हो सर्व कर्म के नाशी, बन जाते शिवपुर वासी।
वे सुख अनन्त को पाते, न लौट यहाँ फिर आते।।8।।

दोहा- सम्यक् चारित प्राप्त कर, करें कर्म का अन्त।
ज्ञान शरीरी सिद्ध जिन, हुए अनन्तानन्त।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भाते हैं यह भावना, पूर्ण करो भगवान।
सम्यक्चारित्र प्राप्त हो, सुपद मिले निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

New
20-6-2012

समुच्चय जयमाला

दोहा- सम्यक् श्रद्धा ज्ञानव्रत, रत्नत्रय शुभकार।
गाते हैं जयमालिका, पाने भवोदधि पार।।

(बेसरी छन्द)

मन में सम्यक् श्रद्धा पावे, सम्यक्ज्ञानी जीव कहावे।
पञ्च महाव्रत भी जो धारे, पञ्च समिति हृदय सम्हारे।।1।।
होके तीन गुप्ति के धारी, मुनिवर हो जाते अविकारी।
स्थिर होके ध्यान लगाते, उनके कर्म बन्ध कट जाते।।2।।
संवर सहित निर्जरा पाते, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्याते।
सोलह कारण भावना भावें, दशलक्षण शुभ धर्म उपावें।।3।।
अतिशयकारी पुण्य कमाते, श्रेष्ठ संहनन वह प्रगटाते।
अतिशय केवलज्ञान जगाते, अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाते।।4।।
शिव रमणी से प्रीति बढ़ाते, चतुर्गति के दुःख नशाते।
वह अष्टादश दोष नशाते, जन्मादि के रोग मिटाते।।5।।
रागादि का भाव नशावे, परमानन्द दशा उपजावें।
परमातम के पद को पावें, निज की शुद्ध दशा पा जावें।।6।।
सुख अनन्त यह प्राणी पावे, नहीं लौट भव में भटकावे।
हम भी यही भावना भाये, रत्नत्रय निधि अब मिल जाये।।7।।

दोहा- रत्नत्रय शुभ धर्म है, तीनों लोक प्रधान।
रत्नत्रय पाने विशद, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् श्रद्धा ज्ञान बिन, भ्रमण किया संसार।
निधि प्राप्त कर धर्म की, पाना मुक्ति द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

क्षमावाणी पूजा

(स्थापना)

क्षमा अंग जिन धर्म का मूल कहे तीर्थेश।
सम्यक् श्रद्धा ज्ञान युत, ध्याये इसे विशेष।।
सहधर्मी से प्रेम हो, हो पापों का नाश।
करके जिन आराधना, सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं क्षमावाणी ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं क्षमावाणी ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द : ताटक)

निर्मल नीर चढ़ाने लाए, प्रभु चरणों भरके झारी।
जन्म-जरा हो नाश हमारा, आई अब मेरी बारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।1।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित चंदन लाए, श्रेष्ठ चढ़ाने मनहारी।
भव आताप विनाश हमारा, हो जाए हे त्रिपुरारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।2।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत चढ़ा रहे हैं, मंगलमय अतिशयकारी।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें हम, बने रहे न संसारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।3।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

New
20-6-2012

पुष्प सुगन्धित लिए मनोहर, हमने यह मंगलकारी।
कामबाण विध्वंस करो प्रभु, तुम हो जग संकटहारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।4।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नैवेद्य बनाए हमने, शुद्ध सरस विस्मयकारी।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, बन जाएँ हम अविकारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।5।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी यह दीप जलाकर, लाए हैं हम तमहारी।
मोह अंध का नाश करो प्रभु, बन जाओ मम हितकारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।6।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप बनाई अष्ट गंध युत, मंगलमय खुशबूकारी।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, बन जाएँ शिवपद धारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।7।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस फल यहाँ चढ़ाने, लाए हैं, हम शुभकारी।
मोक्ष महाफल हमें प्राप्त हो, पावन है जो शिवकारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हैं हम अघहारी।
पद अनर्घ अनुपम है शास्वत, भवि जीवों को सुखकारी।।
क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।
शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।9।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पर्व क्षमावाणी विशद, नाशे वैर विरोध।
गाते हैं जयमाल अब, पाने आतम बोध।।

(शम्भू छन्द)

जैनधर्म का मूल कहा है, देव-शास्त्र-गुरु में श्रद्धान।
शंका करे नहीं तत्त्वों में, निशंकित गुण कहा प्रधान।।
भोगों की वांछा न करता, निकांक्षित गुण कहे जिनेश।
रहित ग्लानि से होता है, देव-शास्त्र-गुरु में अवशेष।।1।।

जो कुदेव को नहीं मानता, वह अमूढ़ दृष्टि विद्वान।
ढ़ाके अवगुण देवादि के, उपगूहन गुणधारी मान।।
जैनधर्म से डिगने वाले, को स्थिर जो करे विशेष।
साधर्मी से प्रीति करे वह, वात्सल्य गुण कहे जिनेश।।2।।

करे प्रकाशन जैनधर्म का, है प्रभावना अंग महान।
अष्ट अंग पाले सद्दृष्टि, अष्टांग पावे सम्यक् ज्ञान।।
शब्दाचार पठन शब्दों का, अर्थाचार है अर्थ प्रधान।
उभयाचार उभय का वाची, है संकल्प सहित उपधान।।3।।

कालाचार समय से पढ़ना, विनयाचार विनय युत जान।
ज्ञान का हो बहुमान अनिह्नव, गुरु का नहीं छिपाना नाम।।

New
20-6-2012

छहों काय जीवों की रक्षा, करते व्रती अहिंसा धार।
सत्य महाव्रतधारी हित-मित, वचन बोलते हैं मनहार।।4।।

चोरी रहित अचौर्यव्रती है, ब्रह्मचर्य धर त्यागे काम।
परिग्रह त्यागी मूर्छा त्यागे, अपरिग्रही है प्यारा नाम।।
मन गुप्ति के धारी करते, कायोत्सर्ग सहित विश्राम।
काय गुप्ति के धारी करते, कायोत्सर्ग सहित विश्राम।।5।।

ईर्या समिति धारी चलते, चार अरत्नि भूमि निहार।
मिष्ट वचन बोले मनहारी, भाषा समिति धार शुभकार।।
छियालिस दोष टालकर भोजन, करें एषणा समीतिवान।
देख प्रमार्जित करके वस्तु, निक्षेपण करते आदान।।6।।

मल एकान्त में करें विसर्जन, समीति प्रतिष्ठापन को धार।
दर्शन-ज्ञान आचरण के गुण, बतलायें ये विविध प्रकार।।
रत्नात्रय की विधि बतायी, क्षमा धर्म के लिए महान।
चैत माघ भादो त्रय महीने, क्षमा धर्म के हैं स्थान।।7।।

दोहा- उत्तम क्षमा को आदिकर, बतलाए दश धर्म।
बाद क्षमावाणी करो, विशद श्रेष्ठ यह कर्म।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तन मन वाणी में क्षमा, जागे छाय महान।
क्षमा धर्म को धारकर, पाएँ पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

भजन

(तर्ज- मधुवन के मंदिरों...)

बाड़े में पद्मप्रभुजी, अतिशय दिखा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।।

मूला था जाट भोला, सपना उसे दिखाया।
सौभाग्य खोदने का, मूला ने श्रेष्ठ पाया।
हम पुण्य के सुफल से, दर्शन जो पा रहे हैं। अतएव....

भक्ति से भक्त आके, प्रभु को पुकारते हैं।
मुद्रा प्रभु की अनुपम, एकटक निहारते हैं।।
आकर के श्रमण श्रावक, गुणगान गा रहे हैं। अतएव....

आते हैं दुःखी प्राणी, दुःखड़ा यहाँ सुनाते।
कर अर्चना प्रभु की, पीड़ा सभी मिटाते।।
कई भूत-प्रेत आकर, महिमा दिखा रहे हैं। अतएव....

दरबार में प्रभु के जाते हैं, रोते-रोते।
आशीष प्राप्त करके, आते हैं हँसते-हँसते।।
चरणों में भक्त आकर, पूजन रचा रहे हैं। अतएव....

है सर्व ऋद्धि सिद्धि दायक, विधान पूजा।
इसके सिवा न कोई है, मंत्र और दूजा।।
यह कृति 'विशद' अनुपम, पद में चढ़ा रहे हैं। अतएव....

***

गुरु वंदना

(तर्ज : हूँ स्वतंत्र निश्चल....)

गुरुवर क्यों बैठे चुपचाप, ज्ञान सिखाओ गुरुवर आप।

New
20-6-2012

गलती करो हमारी माफ, राह दिखाओ हमको साफ।।
हम सबका हो पूर्ण विकास, गुरुवर करो दो पूरी आस।
हमको है पूरा विश्वास, चरणों में करते अरदास।। गुरुदेव क्यों...
गुरुवर हो तुम ज्यों आकाश, हम हैं सभी चरण के दास।
चरणों रहे हमारा वास, गुरुवर रहो हमारे पास।। गुरुदेव क्यों...
जग का नहीं है कोई माप, भटक रहे हम करके पाप।
महामंत्र का करना जाप, आँख मींच करके चुपचाप।। गुरुदेव क्यों...
तुम हो गुरु हमारे नाथ, तुम बिन हम हैं सभी अनाथ।
मोक्ष मार्ग में देना साथ, पद में झुका रहे हम माथ।। गुरुदेव क्यों...
करते सभी वार्तालाप, जैन धर्म की छूटे छाप।
मोक्ष महल में होवे वास, मन में लगी हमारे आस।। गुरुदेव क्यों...
मुस्करा करके दो आशीष, चरणों झुका रहे हम शीश।
मोह राग का 'विशद' अलाप, मिट जाए मन का संताप।। गुरुदेव क्यों...

* * *

श्री जिनवर की आरती

(तर्ज– प्रभु रथ पर हुए सवार...)

प्रभु की आरती में आज, नगाड़े बाज रहे।। टेक।।
सब ठुमुक-ठुमुक कर नाच रहे, कई वाद्य ध्वनि में बाज रहे।
श्री नेमिनाथ जिनराज, नगाड़े बाज रहे।।1।।

कई भक्त आरती गाते हैं, ताली कई लोग बजाते हैं।
आते आरती के काज, नगाड़े बाज रहे।।2।।

शुभ घी की ज्योति जलाई है, आरती करने को आई है।
मिलकर के सकल समाज, नगाड़े बाज रहे।।3।।

प्रभु के यह भक्त निराले हैं, प्रभु भक्ति के मतवाले हैं।
प्रभु तारण तरण जहाज, नगाड़े बाज रहे।।4।।

क्या वीतराग छवि प्यारी है, नाशा दृष्टि मनहारी है।
है विशद धर्म के ताज, नगाड़े बाज रहे।।5।।

* * *

लघु योगि भक्ति

ईर्यापथ भक्ति शुभ वन्दन, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
सकल कर्म के क्षय हेतु हम, करते हैं गुरु बारम्बार।।
भाव पुष्प से पूजा वन्दन, स्तव सहित समर्पित अर्घ्य।
लघु योगी भक्ती सम्बन्धी, करते हैं हम कायोत्सर्ग।।9।।

(कायोत्सर्ग करें।)

वर्षा ऋतु विद्युत हो गर्जन, वृक्ष मूल में हो अधिवास।
शीत ऋतु में निर्भय साधक, व्यक्त देह लकड़ी सम खासङ्क
रवि किरणों से तप्त ग्रीष्म में, गिरि शिखर पर धारें योग।
मुनि श्रेष्ठ जो मोक्ष सिधारे, हमको दें वह धर्म संयोगङ्क 1ङ्क
वर्षा ऋतु में तरु के नीचे, शीत निशा रहते मैदान।
ग्रीष्म ऋतु पर्वत के ऊपर, वन्दूँ मुनि जो करते ध्यानङ्क 11ङ्क
जो निर्ग्रन्थ गिरि कन्दर में, करते हैं दुर्गों में वास।
लें आहार पात्र में कर के, उत्तम गति वह पावें खासङ्क 12ङ्क

अञ्चलिका

कायोत्सर्ग किया है हमने, योगि भक्ति का हे भगवन्!
उसकेआलोचन की इच्छा, करता हूँ करके वन्दनङ्क
दो समुद्र अरु ढाई द्वीप में, कर्म भूमियाँ हैं पन्द्रह।

आतापन अभ्रावकाश अरु, वृक्ष मूल वीरासन यहङ्क1ङ्क
कुक्कुट आसन एक पार्श्वशुभ, पक्षोपवास आदि युत संत।
उनकी नित्य अर्चना पूजा, वन्दन नमन् गुरु मैं अनन्तङ्क
दुःखों का क्षय हो कर्मों का, रत्नत्रय हो प्राप्त प्रभो!
सुगति गमन हो मरण समाधि, जिन गुण पाऊँ शीघ्र विभोङ्क 2ङ्क

●●●

श्रावक प्रतिक्रमण

समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभभावना।
आर्तरौद्र परित्यागः, तद्धि प्रतिक्रमणं मतम्।।

सब जीवों पर साम्यभाव धारण करके शुभ भावनापूर्वक संयम पालते हुए, आर्त–रौद्र का त्याग प्रतिक्रमण कहलाता है।

हे जिनेन्द्र ! हे देवाधिदेव ! हे वीतरागी सर्वज्ञ हितोपदेशी अरिहन्त प्रभु ! मैं पापों के प्रक्षालन के लिए, पापों से मुक्त होने के लिए, आत्म उत्थान के लिए, आत्म जागरण के लिए प्रतिक्रमण करता हूँ। (इस प्रकार प्रतिज्ञा करके एक आसन से बैठकर प्रतिक्रमण प्रारम्भ करें।)

पापी, दुरात्मा, जड़बुद्धि, मायावी, लोभी और राग–द्वेष से मलिन चित्तवाले मैंने जो दुष्कर्म किया है, उसे हे तीन लोक के अधिपति ! हे जिनेन्द्र देव ! निरन्तर समीचीन मार्ग पर चलने की इच्छा करने वाला मैं आज आपके पादमूल में निन्दापूर्वक उसका त्याग करता हूँ।

हाय ! मैंने शरीर से दुष्ट कार्य किया है, हाय ! मैंने मन से दुष्ट विचार किया है, हाय ! मैंने मुख से दुष्ट वचन बोला है। उसके लिए मैं पश्चात्ताप करता हुआ भीतर ही भीतर जल रहा हूँ।

निन्दा और गर्हा से युक्त होकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावपूर्वक किये गये अपराधों की शुद्धि के लिए मैं मन, वचन और काय से प्रतिक्रमण करता हूँ।

समस्त संसारी जीवों की सर्व योनियाँ (जातियाँ) चौरासी लाख हैं एवं सर्व संसारी जीवों के सर्व कुल एक सौ साढ़े निन्यानवे (199½) लाख करोड़ होते हैं, इनमें उपस्थित जीवों की विराधना की हो एवं इनके प्रति होने वाले राग–द्वेष से जो पाप लगे हों। **तस्स मिच्छा मे दुक्कडं** (तत्सम्बन्धी मेरा दुष्कृत मिथ्या हो)।

जो एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय तथा पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीव हैं, इनका जो उत्तापन, परितापन, विराधन और उपघात किया हो, कराया हो और करने वाले की अनुमोदना की है – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त जीवों में से किसी भी जीव की विराधना की हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

एकांत, विपरीत, संशय, वैनयिक और अज्ञान – इन पांच प्रकार के मिथ्यामार्ग और उनके सेवकों की मन–वचन से प्रशंसा की हो– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जिनदर्शन, जलगालन, रात्रिभोजन त्याग, पाँच उदुम्बर त्याग, मद्य त्याग, मांस त्याग मधु त्याग और जीवदया पालन – इन आठ श्रावक के मूलगुणों में अतिचार के द्वारा जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे भगवान ! मूलगुणों के अन्तर्गत जिनदर्शन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अविनय से दर्शन किया हो तथा दर्शन या पूजन करते समय मन, वचन, काय की शुद्धि नहीं रखी हो। जिनदर्शन व्रत पालन करते हुए जिनमार्ग में शंका की हो, शुभाचरण पालन कर संसार–सुख की वाञ्छा की हो, धर्मात्माओं के मलिन शरीर को देखकर ग्लानि की हो मिथ्यामार्ग और

New
20-6-2012

उसके सेवन करने वालों की मन से प्रशंसा की हो तथा मिथ्यामार्ग की वचन से स्तुति की हो, इत्यादि अतिचार अनाचार दोनों लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे नाथ ! मूलगुणों के अन्तर्गत जलगालन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, जल छानने के 48 मिनट बाद उसे फिर नहीं छानकर उसका उपयोग किया हो, प्रमाण से छोटे, इकहरे, मलिन, जीर्ण एवं सछिद्र वस्त्र से जल छाना हो। गर्म पानी की मर्यादा समाप्त हो जाने पर उसका उपयोग किया हो, छानने से शेष बचे जल को और जीवानी को यथास्थान (कड़े वाली बाल्टी से कुओं में) न पहुँचाया हो उसे नाली आदि में डाल दिया हो तथा जीवानी की सुरक्षा में या पानी छानने की विधि में प्रमाद किया हो इत्यादि अनाचार मुझे लगे हों –**तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे देवाधिदेव ! मूलगुणों के अन्तर्गत रात्रि भोजन त्याग व्रत में रात्रि के बने भोजन का, सूर्योदय से 48 मिनट के भीतर या सूर्यास्त के एक मुहूर्त पूर्व तथा औषधि के निमित्त रात्रि को रस, फल आदि का सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे करुणा के सागर ! मूलगुणों के अन्तर्गत पंच–उदुम्बर फल त्याग व्रत में सूखे अथवा औषधि निमित्त उदुम्बर फलों का, सर्व साधारण वनस्पति का, अदरक–मूली आदि अनन्तकायिक वनस्पति का, त्रस जीवों के आश्रयभूत वनस्पति का, बिना फाड़ किये सेमफली आदि एवं अनजाने फलों का सेवन किया हो, कराया हो या करने वालों की अनुमोदना की हो, इत्यादि अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे दया के सागर ! मूलगुणों के अन्तर्गत मद्य त्याग व्रत में मर्यादा के बाहर का अचार, मुरब्बा आदि सर्व प्रकार के सन्धानों का, दो दिन व दो रात्रि

व्यतीत हुए दही, छाछ एवं काँजी आदि आसवों एवं अर्कों का तथा भांग, नागफेन, धतूरा, पोस्त का छिलका, चरस और गांजा आदि नशीले पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या सेवन करने वालों की अनुमोदना की हो तथा अन्य और भी जो अतिचार–अनाचार जन्य दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे करुणा के सागर ! मूलगुणों के अन्तर्गत मांस त्याग व्रत में चमड़े के बेल्ट, पर्स, जूता–चप्पल, घड़ी का पट्टा आदि का स्पर्श हो गया हो या चमड़े से आच्छादित अथवा स्पर्शित हींग, घी, तेल एवं जल आदि का, अशोधित भोजन का, जिसमें त्रस जीवों का संदेह हो ऐसे भोजन का, बिना छना हुआ अथवा विधिपूर्वक दुहरे छन्ने (वस्त्र) से नहीं छाना गया घी, दूध, तेल एवं जल आदि का, सड़े और घुने हुए अनाज आदि का, शोधनविधि से अनभिज्ञ साधर्मी या शोधन–विधि से अपरिचित विधर्मी के हाथ से तैयार हुए भोजन का, बासा भोजन का, रात्रि में बने भोजन का, चलित रस पदार्थों का, बिना दो फाड़ किये काजू, पुरानी मूंगफली, सेमफली एवं भिंडी आदि का और अमर्यादित दूध, दही तथा छाछ आदि पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य जो भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे परमपिता परमात्मा ! मूलगुणों के अन्तर्गत मधुत्याग व्रत में औषधि के निमित्त मधु का, फूलों के रसों का एवं गुलकन्द आदि का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे नित्य निरंजन देव ! मूलगुणों के अन्तर्गत जीवदया व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अज्ञान रखा हो, उपेक्षा की हो, बिना प्रयोजन जीवों को सताया हो तथा अंगोपांग छेदन किये हों, कराये हों या अनुमोदना की हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

New
20-6-2012

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

जुआ, मांस, मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, चोरी और परस्त्री सेवन– इन सप्तव्यसन सेवन में जो पाप लगा हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

देव दर्शन–पूजन, साधु उपासना–वैयावृत्ति, स्वाध्याय, संयम पालन, इच्छायें सीमित करना और अर्जित संपत्ति का सदुपयोग (दान देना) इन षडावश्यक पालन में अतिचारपूर्वक जो दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

इष्टवियोग, अनिष्ट संयोग, पीड़ा चिंतन और निदान – ये चार आर्तध्यान। हिंसानंद, मृषानंद, चौर्यानंद और परिग्रहानंद – ये चार रौद्रध्यान द्वारा जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

राजकथा, चोरकथा, स्त्रीकथा और भोजनकथा करने से जो पाप लगे हों– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जीवों को सताने वाला दुष्ट मन, दुष्ट वचन और दुष्ट काय – ये तीन दण्ड, माया, मिथ्या और निदान तीन शल्य और शब्द गारव, ऋद्धि गारव और सात गारव द्वारा जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग – इन पाँच आस्रवों द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

आहार, भय, मैथुन और परिग्रह – इन चार संज्ञाओं के द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

इहलोकभय, परलोकभय, मरणभय, वेदनाभय, अगुप्तिभय, अरक्षाभय (अत्राणभय) और अकस्मात् सप्त भयों के द्वारा जो पापबन्ध हुआ हो– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।** (नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

स्थूल हिंसा विरति व्रत का पालन करते हुए जीवों को मारा हो, बांधा हो,

अंगोपांग छेदे हों, अधिक बोझ लादा हो एवं अन्नपान का निरोध किया हो, इत्यादि अनेक दोष कृत–कारित–अनुमोदना से किये हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल असत्य विरति व्रत का पालन करते हुए मिथ्योपदेश देने से, एकान्त में कही हुई बात को प्रगट कर देने से, झूठा लेख लिखने से तथा किसी भी चेष्टा से अभिप्राय समझ कर भेद प्रकट कर देने से एवं पर का धन अपहरण करने से जो दोष मन–वचन–काय एवं कृत–कारित–अनुमोदना से लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल चौर्य विरति व्रत के पालन करने में चोर द्वारा चुराया हुआ द्रव्य ग्रहण किया हो, राज्य के विरुद्ध कार्य किया हो, धरोहर हरण करने के भाव किये हों, तौलने के बाँट कमती या बढ़ती रखे हों और अधिक कीमती वस्तु में अल्प कीमती वस्तु मिलाकर बेची हो एवं मन, वचन, काय एवं कृत–कारित–अनुमोदना से, चोरी का प्रयोग बतलाने से जो दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल अब्रह्म विरति व्रत पालन करने में व्यभिचारिणी स्त्री के साथ आने–जाने का व्यवहार रखा हो, कुमारी, विधवा एवं सधवा आदि अपरिगृहीत स्त्रियों के साथ आने–जाने या लेन–देन का व्यवहार रखा हो, काम सेवन के अंगों को छोड़कर दूसरे अंगों से कुचेष्टाएँ की हों, काम के तीव्र वेग से वीभत्स विचार बने हों और मन, वचन, काय और कृत–कारित–अनुमोदना से अन्य के पुत्र–पुत्रियों का विवाह किया हो, इस प्रकार जो भी दोष लगे हों– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल परिग्रह–परिमाण व्रत में मन, वचन, काय एवं कृत–कारित–अनुमोदना से जमीन और मकान आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, गाय, बैल आदि धन, अनाज आदि धान्य, दासी–दास, चांदी–सोना, वस्त्र एवं

बर्तन आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्ड विरति व्रत – ये तीन गुणव्रत और भोग परिमाण व्रत,परिभोग परिमाणव्रत, अतिथिसंविभाग व्रत, समाधि मरणव्रत, ये चार शिक्षाव्रत रूप बारह व्रतों में जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

पाँच इन्द्रियों और मन को वश में न करने से जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मोह के वशीभूत होकर अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम् वस्त्र एवं स्त्रियों को आकर्षित करने वाला शरीर का श्रृंगार किया हो, राग के उद्रेक से युक्त हँसी में अशिष्ट वचनों का प्रयोग किया हो और परस्पर प्रीति से रहने वालों के बीच में द्वेष किया हो, तज्जन्य जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

तप और स्वाध्याय से हीन असम्बद्ध प्रलाप करने में, अन्यथा पढ़ने–पढ़ाने से एवं अन्यथा ग्रहण (सुनने) करने से जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका की किसी भी प्रकार से निन्दा की हो,कराई हो,सुनी हो,सुनाई हो इससे जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

साधुओं वा साधर्मियों से कटु वचन बोला हो एवं आहार दान देने में प्रमाद करने से जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

देव–शास्त्र–गुरु की अविनय एवं आसादना से जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

पाश्चात्य वेशभूषा का उपयोग कर, टी.वी. आदि देखकर एवं उपन्यास आदि पढ़कर शील में जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

उच्च कुलों को गर्हित कुल बनाने में कृत–कारित–अनुमोदना से सहयोग देने में जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

चलने–फिरने, शरीर को हिलने–हिलाने, उठने–बैठाने, छींकने–खांसने, सोने, जम्हाई लेने और मार्ग चलने–चलाने में देखे, बिना देखे तथा जाने–अनजाने में जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

किसी भी जीव को मैंने दबा दिया हो, कुचल दिया हो, घुमा दिया हो, भयभीत कर दिया हो, त्रास दिया हो, वेदना पहुँचाई हो, छेदन–भेदन कर दिया हो अथवा अन्य किसी प्रकार से भी कष्ट पहुँचाया हो**–तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जाने–अनजाने में और जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़।**

हा दुट्ठकयं हा दुट्ठचिंतियं, भासियं च हा दुट्ठं।
अन्तो अन्तो डज्झमि पच्छत्तावेण वेयंतो।।

हाय–हाय! मैंने दुष्टकर्म किए, मैंने दुष्ट कर्मों का बार–बार चिन्तवन किया, मैंने दुष्ट मर्म–भेदक वचन कहे– इस प्रकार मन, वचन और काय की दुष्टता से मैंने अत्यन्त कुत्सित कर्म किये। उन कर्मों का अब मुझे पश्चात्ताप है।

हे प्रभु ! मेरा किसी भी जीव के प्रति राग नहीं है, द्वेष नहीं है, बैर नहीं है तथा क्रोध, मान, माया, लोभ नहीं है, अपितु सर्व जीवों के प्रति उत्तम क्षमा है।

हे प्रभु ! जब तक मोक्षपद की प्राप्ति न हो तब तक भव–भव में मुझे शास्त्रों के पठन–पाठन का अभ्यास, जिनेन्द्र पूजा, निरन्तर श्रेष्ठ पुरुषों की संगति,सच्चरित्र सम्पन्न पुरुषों के गुणों की चर्चा, दूसरों के दोष कहने में मौन, सभी प्राणियों के प्रति मैत्री और हितकारी वचन एवं आत्मकल्याण की भावना

New
20-6-2012

(प्रतीति) ये सब वस्तुएँ प्राप्त होती रहें।

हे जिनेन्द्र देव ! मुझे जब तक मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक आपके चरण मेरे हृदय में और मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे।

हे भगवन् ! मेरे दुःखों का क्षय हो, कर्मों का नाश हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो, शुभगति हो, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो, समाधिमरण हो और श्री जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो – ऐसी मेरी भावना है, मेरी भावना है, ऐसी मेरी भावना है।

इत्याशीर्वादः (इसके बाद क्षमा वन्दना बोलें)

आद्य वक्तव्य

इंसान जो कल था आज भी वही रहे तो समझो उसका आज व्यर्थ गया। आज कुछ विकास होना कल के पार जाने का मार्ग है, अतीत का अतिक्रमण करना है।

इंसान का अतीत उसकी पशुता है और भविष्य उसका परमात्म पद है; क्योंकि परमात्म पद के बिना मंदिर में प्रवेश संभव नहीं है, मनुष्य पशु से परमात्म की यात्रा का सेतु है उस पर चलकर संसार सागर पार करना है। इंसान का काम इंसानियत और 'विशद' धर्म है एवं सदाचरण इंसान की पूँजी है।

* * *

New
20-6-2012

विशद चालीसा संग्रह